* 19th Year
* Issue: 241
* 06.01.2026 (TUESDAY)
* ROURKELA
* R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
* (Pages-6)
* Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

सोमनाथ मंदिर हमारी अदम्य भावना का प्रतीक, पीएम मोदी ने ब्लॉग लिखकर बताया क्यों खास है यह मंदिर

नयी दिल्ली ०५/०१ (संवाददाता): सोमनाथ... यह शज़्द सुनते ही हमारे दिलों और दिमाग में गर्व की भावना भर जाती है। यह भारत की आत्मा की शाश्वत घोषणा है। यह शानदार मंदिर भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात में प्रभास पाटन नाम की जगह पर स्थित है। द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्र में पूरे भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों का उल्लेख है। स्तोत्र की शुरुआत सौराष्ट्रे सोमनाथं से होती है, जो पहले ज्योतिर्लिंग के रूप में सोमनाथ के सज़्यतागत और आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को गुजरात के सोमनाथ मंदिर की तारीफ की, जिसे विदेशी हमलावरों द्वारा बार-बार हमलों के बाद फिर से बनाया गया था, और इसे भारतीय सज़्यता की अदज़्य भावना का प्रतीक बताया। सोमनाथ मंदिर पर पहले हमले के 1,000 साल पूरे होने पर एक ज़्लॉगपोस्ट में, पीएम मोदी ने कहा, हमारी सज़्यता की अदज़्य भावना का सोमनाथ से बेहतर कोई उदाहरण नहीं हो सकता, जो मुश्किलों और संघर्षों को पार करते हुए शान से खड़ा है। पीएम मोदी ने कहा कि 2026 में सोमनाथ मंदिर पर पहले हमले के 1,000 साल पूरे हो गए और बाद में बार-बार हमलों के बावजूद, मंदिर आज भी शान से खड़ा है।प्रधानमंत्री ने कहा, ऐसा इसलिए है ज़्योंकि सोमनाथ की कहानी भारत माता के अनगिनत बच्चों के अटूट साहस के बारे में है जिन्होंने हमारी संस्कृति और सज़्यता की रक्षा की। उन्होंने कहा कि यही भावना देश में भी दिखाई देती है, जो सदियों के आक्रमणों

और औपनिवेशिक लूट से उबरकर वैश्विक विकास के सबसे चमकीले स्थानों में से एक के रूप में उभरा है।

पीएम मोदी ने कहा, यह हमारी मूल्य प्रणालियाँ और हमारे लोगों का दृढ़ संकल्प है जिसने आज भारत को वैश्विक ध्यान का केंद्र बनाया है। दुनिया भारत को उज़्मीद और आशावाद के साथ देख रही है। वे हमारे इनोवेटिव युवाओं में निवेश करना चाहते हैं।पीएम मोदी ने कहा, हमारी कला, संस्कृति, संगीत और कई त्योहार वैश्विक स्तर पर जा रहे हैं। योग और आयुर्वेद दुनिया भर में प्रभाव डाल रहे हैं, स्वस्थ जीवन को बढ़ावा दे रहे हैं। कुछ सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों के समाधान भारत से आ रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि अतीत के हमलावर अब हवा में धूल बन गए हैं, उनके नाम विनाश के पर्याय बन गए हैं। उन्होंने कहा, वे इतिहास के पन्नों में सिर्फ़ फुटनोट हैं, जबकि सोमनाथ चमक रहा है, क्षितिज से बहुत दूर तक रोशनी फैला रहा है, जो हमें उस शाश्वत भावना की याद दिलाता है जो 1026 के हमले से भी कम नहीं हुई। प्रधानमंत्री ने कहा, श्री सोमनाथ महादेव के आशीर्वाद से, हम एक विकसित भारत बनाने के नए संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं, जहाँ हमारी सज़्यता की समझ हमें पूरी दुनिया के कल्याण के लिए काम करने का मार्गदर्शन करती है।卐

मंदिर पर कई बार हमला हुआ और उसे लूटा गया, जिसमें 1024 ईस्वी में तुर्की शासक महमूद गजनवी का हमला भी शामिल है। पीएम मोदी ने याद किया कि आज़ादी के बाद सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल ने अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने कहा, 1947 में दिवाली के समय की यात्रा ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने घोषणा की कि मंदिर का पुनर्निर्माण वहीं किया जाएगा। आखिरकार, 11 मई 1951 को सोमनाथ में एक भव्य मंदिर भक्तों के लिए खोला गया और डॉ. राजेंद्र प्रसाद वहाँ मौजूद थे। पीएम मोदी ने कहा कि सरदार पटेल 11 मई 1951 को सोमनाथ मंदिर का उद्घाटन देखने के लिए जीवित नहीं थे, लेकिन उनके सपने की पूर्ति देश के सामने खड़ी थी।1299 ईस्वी में, अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति अलाफ खान ने फिर से मंदिर को नष्ट कर दिया और उसके टुकड़े दिल्ली ले गए। एक बार फिर, हिंदू शासकों ने इसका पुनर्निर्माण किया।1394 में, गुजरात के गवर्नर मुजज़्फर खान ने फिर से मंदिर को नष्ट कर दिया। किसी न किसी तरह का मंदिर फिर से बनाया गया होगा। 1459 ईस्वी में महमूद बेगड़ा या मुजज़्फर द्धद्ध ने फिर से सोमनाथ मंदिर को अपवित्र किया।1669 ईस्वी तक, मंदिर फिर भी हिंदुओं के एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में काम करता रहा, जब औरंगजेब ने देश के अन्य हिंदू मंदिरों के साथ इसे भी गिराने का आदेश दिया। 1702 ईस्वी में औरंगजेब ने सोमनाथ मंदिर को पूरी तरह से नष्ट करने का आदेश दिया। 1706 ईस्वी में, औरंगजेब के आदेश पर मंदिर को मस्जिद में बदल दिया गया।रानी अहिल्याबाई होल्कर ने पवित्र निरंतरता को पहचानते हुए 1783 में पास में एक नया मंदिर बनवाया। इसे विनाश से बचाने के लिए लिंग को सामान्य ऊपरी मंदिर के ठीक नीचे एक गुप्त भूमिगत मंदिर में रखा गया था।

भारतीय तटरक्षक बल से टकराने की हिम्मत मत करना-राजनाथ

नयी दिल्ली ०५/०१ (संवाददाता): रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोमवार को कहा कि भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) ने देश की तटरेखा को शत्रुओं के लिए अछूत बना दिया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि तटरक्षक बल ने शत्रुओं के मन में ऐसा भय पैदा कर दिया है कि यदि कोई सीमा की ओर देखने की भी हिज़्मत करेगा, तो तटरक्षक बल उसे नहीं छोड़ेगा। आईसीजी के पहले प्रदूषण नियंत्रण पोत समुद्र प्रताप के शुभारंभ समारोह को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि हमारे तटरक्षक बल ने हमारे शत्रुओं के मन में ऐसा भय पैदा कर दिया है कि यदि कोई हमारी सीमा की ओर देखने की भी हिज़्मत करेगा, तो तटरक्षक बल

उसे ऐसा करने की स्थिति में नहीं छोड़ेगा।

रक्षा मंत्री ने कहा कि %समुद्र प्रताप% का शुभारंभ देश की व्यापक समुद्री दृष्टि से जुड़ा है, जो यह मानती है कि समुद्री संसाधन किसी एक राष्ट की संपज़ि नहीं बल्कि मानवता की साझा विरासत हैं। उन्होंने कहा कि जब विरासत साझा होती है, तो उसकी सुरक्षा की जिज़्मेदारी भी साझा होती है। यही कारण है कि भारत आज शांति, स्थिरता और पर्यावरण संबंधी जिज़्मेदारी के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होकर वैश्विक मंच पर मजबूती से खड़ा है। भारत को एक जिज़्मेदार समुद्री शक्ति बताते हुए रक्षा मंत्री ने कहा, ऐसे समय में जब दुनिया वैश्विक समुद्री अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है, भारत ने बार-बार यह साबित किया है कि वह न केवल अपने हितों की रक्षा करता है, बल्कि पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता भी सुनिश्चित करता है। साथ मिलकर आगे बढ़ने का यही समावेशी दृष्टिकोण भारत को एक जिज़्मेदार समुद्री शक्ति बनाता है। रक्षा मंत्री ने कहा, हमें समुद्री शासन के क्षेत्र में मानदंड निर्धारित करने होंगे, क्षमता निर्माण पहलों को मजबूत करना होगा और सहयोगात्मक ढांचों को आगे बढ़ाना होगा। भारतीय तटरक्षक बल को अपने परिचालन सिद्धांतों, संस्थागत प्रथाओं और तकनीकी नवाचारों को ऐसे उच्च मानकों तक पहुंचाना होगा कि उनकी सर्वोज़म प्रथाओं का विश्व स्तर पर अनुसरण किया जाए।

उन्होंने आगे कहा, पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय तटरक्षक बल ने खुद को क्षेत्रीय मानक स्थापित करने वाले के रूप में स्थापित किया है। अब समय आ गया है कि इस भूमिका को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाया जाए और वैश्विक नेतृत्व की ओर निर्णायक रूप से कदम बढ़ाया जाए। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गोवा शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा निर्मित किए जा रहे दो प्रदूषण नियंत्रण पोतों (पीसीवी) की श्रृंखला में पहले पोत, भारतीय तटरक्षक पोत (आईसीजीएस) समुद्र प्रताप को कमीशन किया। इस अवसर पर गोवा के मुज़्यमंत्री प्रमोद सावंत भी उपस्थित थे।

पीएम मोदी से मिले सीएम योगी, मंत्रिमंडल विस्तार पर हुआ मंथन

नयी दिल्ली ०५/०१ (संवाददाता): उज़र प्रदेश के मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को प्रधानमंत्री मोदी से प्रधानमंत्री आवास पर मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं ने मंत्रिमंडल विस्तार और 2027 के चुनावों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने राज्य की विकास योजनाओं के साथ-साथ आगामी चुनावों के लिए राजनीतिक रणनीति पर भी चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद, मुज़्यमंत्री योगी के दोपहर 3=30 बजे भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात करने की उज़्मीद है। यह मुलाकात ऐसे समय में हो रही है जब उज़र प्रदेश में मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर चर्चाएँ तेज़ हो रही हैं। पंकज चौधरी को उज़र प्रदेश भाजपा का नया अध्यक्ष नियुक्त किए जाने के बाद, राज्य मंत्रिपरिषद का लंबे समय से प्रतीक्षित विस्तार और संगठन में बदलाव पार्टी के एजेंडे में अगला कदम है। मंत्रिमंडल विस्तार संभवत: 14-15 जनवरी, 2026 को मकर संक्रांति के त्योहार के बाद

होगा। इसके अलावा, आयोगों, बोर्डों और परिषदों में राजनीतिक नियुक्तियों की प्रक्रिया भी जल्द ही शुरू होगी। हाल के दिनों में भाजपा में कई बदलाव देखने को मिले हैं। हाल ही में, भाजपा ने नितिन नबीन को राष्टीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त करके सबको चौंका दिया, वहीं उज़र प्रदेश में पंकज चौधरी को नया प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

पंकज चौधरी उज़र प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल करने वाले एकमात्र नेता थे। इसके अलावा, भाजपा तब सुर्खियों में आई जब कई ब्राह्मण विधायकों ने एक साथ भोज में भाग लिया। इससे उज़र प्रदेश की राजनीति में हलचल मच गई और मामला दिल्ली तक पहुंच गया। दरअसल, कुछ दिन पहले पीएन पाठक के लखनऊ स्थित आवास पर ब्राह्मण भाजपा विधायकों की एक बैठक हुई थी। इस बैठक को सहभोज कहा गया। बैठक में लगभग 40 विधायक और एमएलसी शामिल हुए। दरअसल, यह बैठक इसलिए भी सुर्खियों में थी ज़्योंकि इससे कुछ समय पहले ठाकुर विधायकों ने भी दो बैठकें की थीं। राज्य सरकार के मंत्री जयवीर सिंह और दयाशंकर सिंह, अन्य मंत्रियों और विधायकों के साथ बैठक में शामिल हुए थे। पूर्व सांसद राजवीर सिंह राजू भैया ने भी विधायकों, सांसदों और लोध समुदाय के नेताओं का एक सज़्मेलन आयोजित किया था।

परिसीमन ने बदला असम का सियासी समीकरण? हिमंता बोले-अब एनडीए जीतेगी 103 सीटें

गुवाहाटी ०५/०१ (संवाददाता): असम के मुज़्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने रविवार को कहा कि सज़ारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्टीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में उसके सहयोगी मार्च-अप्रैल में होने वाले विधानसभा चुनावों में 126 सीटों में से 103 सीटें जीतने की संभावना रखते हैं। सरमा ने कामरूप महानगरपालिका जिले के दिमोरिया में एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि मैं सटीक आंकड़ा नहीं देना चाहूंगा, लेकिन इस बार हमारे पास 103 सीटें जीतने का मौका है। पहले यह संभावना लगभग 90 सीटों की थी, लेकिन सीटों के परिसीमन के बाद यह संज़्या 13-15 सीटों से और बढ़ गई है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के महासचिव द्वारा शनिवार देर रात जारी अधिसूचना में कहा गया है कि पार्टी नेता प्रियंका गांधी वाड्रा को आगामी असम विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी की चयन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। चुनाव आयोग (ईसी) ने अगस्त 2023 में राज्य की 126 विधानसभा सीटों और 14

लोकसभा सीटों का परिसीमन पूरा कर लिया था, जिसके परिणामस्वरूप दोनों श्रेणियों में कई निर्वाचन क्षेत्रों का बड़े पैमाने पर पुनर्निर्धारण हुआ। भाजपा ने उस समय कहा था कि इस प्रक्रिया से राज्य की स्वदेशी आबादी के लिए अधिकांश सीटें सुरक्षित करने में मदद मिलेगी।

सरमा ने कहा कि भाजपा और उसके सहयोगी दल 103 सीटों पर पूरी ताकत से चुनाव लड़ेंगे। शेष 23-24 सीटों पर हमारी जीत की संभावना बहुत कम है। उन सीटों पर प्रतीकात्मक मुकाबला होगा। जिन 103 सीटों पर हम कड़ी टक्कर देंगे, उनमें से मतदाता हमें 100, 90 या 80 सीटें दे सकते हैं। भाजपा वर्तमान में असम में तीन क्षेत्रीय दलों - असम गण परिषद (एजीपी), यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी लिबरल (यूपीपीएल) और बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) के साथ गठबंधन में है। इन दलों के बीच अभी तक सीटों के बंटवारे को लेकर कोई समझौता नहीं हुआ है।

इस बीच, असम कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई ने कहा है कि उनकी पार्टी 100 सीटों पर चुनाव लड़ेगी, जबकि शेष 26 सीटें रायजोर दल, असम जातीय परिषद और सीपीआई (एम) जैसे अन्य संभावित सहयोगियों के लिए छोड़ी जाएंगी। गोगोई ने यह भी कहा कि अखिल भारतीय संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (एयूआईडीएफ) विपक्षी गठबंधन का हिस्सा नहीं होगा।

वेनेजुएला के बाद ईरान में घुसने वाला है अमेरिका?

नयी दिल्ली ०५/०१ (संवाददाता): देशव्यापी सरकार विरोधी प्रदर्शनों के मद्देनजर भारत ने ईरान के लिए यात्रा संबंधी चेतावनी जारी की है। भारतीय नागरिकों को सलाह दी जाती है कि वे ईरान की गैर-जरूरी यात्रा से बचें। हाल के घटनाक्रमों को देखते हुए, भारतीय नागरिकों को अगली सूचना तक गैर-जरूरी यात्रा से बचने की सलाह दी जाती है। ईरान में मौजूद भारतीय नागरिकों और पहचानकर्ताओं को सावधानी बरतनी चाहिए, विरोध प्रदर्शनों वाले क्षेत्रों से दूर रहना चाहिए और समाचारों के साथ-साथ तेहरान स्थित भारतीय दूतावास की वेबसाइट और सोशल मीडिया पर भी नजर रखनी चाहिए।

रूसी तेल पर दबाव, ट्रंप की चेतावनी, भारत पर बढ़ सकता है अमेरिकी टैरिफ

नयी दिल्ली ०५/०१ (संवाददाता): वैश्विक व्यापार और भू-राजनीति के दबावों के बीच अमेरिका और भारत के रिश्तों को लेकर एक बार फिर सज़्त संकेत सामने आए हैं। रविवार को अमेरिकी राष्टपति डोनाल्ड ट्रंप ने साफ शज़्दों में कहा कि अगर भारत ने रूस से कच्चे तेल की खरीद पर लगाम नहीं लगाई, तो अमेरिका भारत पर और ज्यादा टैरिफ बढ़ा सकता है।बता दें कि एयर फोर्स वन में पत्रकारों से बातचीत करते हुए ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर कहा कि वह अच्छे इंसान हैं और उन्हें यह मालूम था कि अमेरिकी राष्टपति भारत की नीति से खुश नहीं हैं। ट्रंप ने यह भी जोड़ा कि व्यापार के मामले में अमेरिका बहुत तेजी से टैरिफ बढ़ाने की स्थिति में है। यह बयान ऐसे समय आया है जब दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते को लेकर महीनों से

बातचीत चल रही है, लेकिन कोई ठोस नतीजा नहीं निकल पाया है। गौरतलब है कि पिछले साल अमेरिका ने भारत से आयात होने वाले कई उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया था। इनमें से करीब 25 प्रतिशत टैरिफ सीधे तौर पर रूस से तेल खरीदने के कारण लगाए गए थे। मौजूद जानकारी के अनुसार, अमेरिका भारत पर यह दबाव इसलिए बना रहा है ताकि रूस की ऊर्जा आय को सीमित किया जा सके। ट्रंप के बयान का असर भारतीय बाजारों में भी देखने को मिला। सोमवार को आईटी शेयरों पर दबाव दिखा और निज़्टी आईटी इंडेज़्स करीब ढाई प्रतिशत गिरकर एक महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया। निवेशकों को आशंका है कि अगर व्यापार तनाव बढ़ता है, तो भारत-अमेरिका ट्रेड डील और ज्यादा लटक सकती है।

इस बीच रिपज़्लिकन सीनेटर लिंडसे ग्राहम, जो ट्रंप के करीबी माने जाते हैं, ने कहा कि रूस की तेल कंपनियों पर अमेरिकी प्रतिबंधों और भारत पर ऊंचे टैरिफ का असर पड़ा है और भारत ने रूसी तेल की खरीद कुछ हद तक कम की है। उन्होंने ऐसे देशों पर 500 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने के प्रस्ताव का समर्थन किया जो अब भी रूस से सस्ता तेल खरीद रहे हैं। हालांकि व्यापार विशेषज्ञों की राय इससे अलग है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव के संस्थापक अजय श्रीवास्तव का कहना है कि भारत पहले ही 50 प्रतिशत अमेरिकी टैरिफ का सामना कर रहा है और रूसी तेल की खरीद पूरी तरह बंद न होने से वह एक रणनीतिक असमंजस की स्थिति में है। उनके मुताबिक अब अस्पष्ट रुख काम नहीं करेगा और भारत को अपनी नीति को लेकर स्पष्टता दिखानी होगी। बता दें कि भारत ने हाल के महीनों में अमेरिकी दबाव के बाद रूसी तेल आयात में कुछ कटौती जरूर की है, लेकिन इसे पूरी तरह रोका नहीं गया है। इसी बीच सरकार ने रिफाइनरियों से रूसी और अमेरिकी तेल की साप्ताहिक खरीद का ज़्योरा भी मांगा है ताकि अमेरिका की चिंताओं को दूर किया जा सके।

गौरतलब है कि भारी टैरिफ के बावजूद नवंबर में भारत का अमेरिका को निर्यात बढ़ा था, हालांकि मई से नवंबर 2025 के बीच कुल निर्यात में 20 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट भी दर्ज की गई है। प्रधानमंत्री मोदी और राष्टपति ट्रंप के बीच टैरिफ लागू होने के बाद कम से कम तीन बार बातचीत हो चुकी है, जबकि पिछले महीने भारत के वाणिज्य सचिव ने अमेरिकी व्यापार अधिकारियों से मुलाकात की थी। इसके बावजूद दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते पर स्थिति अब भी साफ नहीं हो पाई है और आने वाले समय में इस मुद्दे पर दबाव और बढ़ सकता है।

विविध समाचार

शक्ति से साझेदारी तक, 2025 में भारतीय नौसेना ने कैसे बदली हिंद-प्रशांत की तस्वीर, 2026 में दिखेगा समुंदर के प्रहरियों का अगला अध्याय

नयी दिल्ली ०५/०१ (संवाददाता): 2025 में भारतीय नौसेना सिर्फ समुद्रों की प्रहरी नहीं रही, बल्कि भारत की बढ़ती वैश्विक समुद्री ताकत की मजबूत पहचान बनकर उभरी। ऑपरेशन सिंदूर और विमानवाहक पोतों की दमदार तैनाती से जहां दुनिया का ध्यान भारत की सामरिक शक्ति पर गया, वहीं पर्दे के पीछे नौसेना ने समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और स्वदेशी जहाज निर्माण के ज़रिये क्षेत्रीय स्थिरता को मजबूती दी। 31 मार्च 2025 को एक उल्लेखनीय अभियान चलाया गया, जब फ्रिगेट आईएनएस तारकश ने पी-8आई समुद्री गश्ती विमान की सहायता से पश्चिमी हिंद महासागर में एक संदिग्ध नाव को रोका।

तलाशी दल ने लगभग 2,500 किलोग्राम नशीले पदार्थ, जिनमें हशीश और हेरोइन शामिल थे, जञ्त किए। यह नौसेना की अवैध तस्करी को रोकने और महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित करने की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पूरे वर्ष पुलिस बल के कार्य नियमित रूप से चलते रहे। ऑपरेशन संकल्प के तहत, नौसेना ने व्यापारिक जहाजों को सुरक्षा प्रदान की, समुद्री डाकुओं के खिलाफ गश्त की और जहाजों पर चढ़कर बचाव कार्य किए। ये प्रयास, हालांकि विमानवाहक पोतों पर हमलों जितने प्रसिद्ध नहीं हैं, लेकिन भारत के व्यापार मार्गों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिनसे देश के अधिकांश ऊर्जा आयात और निर्यात होते हैं।

सैन्य अभियानों के अलावा, इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर विशेष बल दिया गया। ञ्क्ष्क्ष्ध्ङ्ग-25, एक महत्वपूर्ण सैन्य अञ्यास, ने हिंद महासागर में युद्ध कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद बहुपक्षीय और द्विपक्षीय अञ्यास हुए, जिनमें चह्लह्यह्न-25 भी शामिल है, जिसमें ढ्ढहृस् विक्रांत ने ब्रिटेन के ॥रूस् प्रिंस ऑफ वेल्स विमानवाहक पोत समूह के साथ मिलकर काम किया। इसके अलावा नॉर्वे और जापान के साथ समुद्र शक्ति और इंडोनेशिया के साथ भी अञ्यास हुए, जिनमें पनडुञ्बी रोधी युद्ध और समुद्री निगरानी पर ध्यान केंद्रित किया गया। अन्य महत्वपूर्ण अञ्यासों में गुआम के तट पर क्वाड का मालाबार अञ्यास, नौ नौसेनाओं के नेतृत्व में फ्रांस द्वारा किया गया ला पेरूज़ अञ्यास, फ्रांस के साथ वरुण अञ्यास और भारत-अफ्रीका का पहला बहुपक्षीय ्क्चयश्वङ्करूक्ष अञ्यास शामिल थे। इन अञ्यासों ने अंतर-संचालनीयता को मजबूत किया और भारत को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में स्थापित किया।

भारतीय नौसेना को बोलार्ड पुल टग्स, हाई फ्रीक्वेंसी सॉञ्टवेयर डिफाइंड रेडियो मैनपैक और हाई एल्टीट्यूड लॉन्ग रेंज रिमोटली पायलेटेड एयरक्राञ्ट सिस्टम (आरपीएएस) के पट्टे की मंजूरी मिल गई है। बीपी टग्स प्रतिबंधित जलक्षेत्रों में जहाजों और पनडुञ्बियों को लंगर डालने और पैंतरेबाज़ी करने में सहायता प्रदान करेंगे। एचएफ एसडीआर से बोर्डिंग और लैंडिंग मिशन के दौरान लंबी दूरी के सुरक्षित संचार में सुधार होने की उञ्मीद है। एचएएलई आरपीएएस निरंतर निगरानी प्रदान करेगा और हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री क्षेत्र की जागरूकता को मजबूत करेगा।

आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत स्वदेशीकरण की दिशा में उठाया गया कदम एक महत्वपूर्ण उपलञ्धि थी। जहाँ ढ्ढहृस् तमाल रूस से कमीशन किया गया अंतिम विदेशी निर्मित युद्धपोत था, वहीं 2025 में घरेलू स्तर पर निर्मित जहाजों की संञ्या में भारी वृद्धि देखी गई। उल्लेखनीय रूप से शामिल किए गए जहाजों में विध्वंसक ढ्ढहृस् सूरत (विशाखापञ्नम श्रेणी), पहले तीन नीलगिरी श्रेणी के स्टील्थ फ्रिगेट (ढ्ढहृस् नीलगिरी, ढ्ढहृस् हिमगिरी, ढ्ढहृस् उदयगिरी), अंतिम कलवरी श्रेणी की पनडुञ्बी ढ्ढहृस् वागशीर, उथले पानी में चलने वाली पनडुञ्बी रोधी नौकाएँ जैसे ढ्ढहृस् अर्नाला, ढ्ढहृस् एंड्रोथ और ढ्ढहृस् माहे, गोताखोरी सहायता पोत ढ्ढहृस् निस्तार और सर्वेक्षण जहाज ढ्ढहृस् निर्देशक और ढ्ढहृस् इक्षक शामिल थे। इन उन्नयनों से न केवल युद्धक क्षमताएं बढ़ती हैं, बल्कि भारत के रक्षा उद्योग को भी मजबूती मिलती है, रोजगार सृजन होता है और नागरिक अनुप्रयोगों के लिए तकनीकी नवाचार को बढ़ावा मिलता है।

खतरों को रोकने और जान बचाने से लेकर गठबंधन बनाने और क्षमता निर्माण तक, नौसेना की बहुआयामी भूमिका भारत की आर्थिक सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभाव को सीधे तौर पर समर्थन देती है। भविष्य में, फरवरी 2026 में विशाखापञ्नम में होने वाली अंतर्राष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा और मिलान-26 जैसी घटनाएं वैश्विक मंच पर इन शक्तियों का प्रदर्शन करेंगी, जो भारत को एक सहयोगी समुद्री नेता के रूप में स्थापित करने के महासागर दृष्टिकोण के अनुरूप हैं। 2025 प्रत्यक्ष दृढ़ता और निरंतर प्रयास का वर्ष रहा, और भारतीय नौसेना ने यह साबित कर दिया कि आधुनिक नौसैनिक शक्ति केवल प्रमुख अभियानों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निरंतर उपस्थिति और साझेदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

एसआईआर के दौरान 'अमानवीय' आचरण के खिलाफ अदालत का रुख करूंगी-ममता

कोलकाता ०५/०१ (संवाददाता): पश्चिम बंगाल की मुञ्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को कहा कि वह राज्य में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान किए गए ''अमानवीय'' आचरण के खिलाफ अदालत का रुख करेंगी। दक्षिण 24 परगना जिले के सागर द्वीप में एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि इस प्रक्रिया से जुड़े भय, उत्पीड़न और प्रशासनिक मनमानी के कारण कई लोगों की मौत हुई है और कई लोगों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा है। उन्होंने कहा, ''हम एसआईआर के कारण हुए अमानवीय व्यवहार और इतनी बड़ी संञ्या में लोगों की मौत के खिलाफ अदालत में कल याचिका दायर करेंगे।'' उन्होंने कहा, ''यदि अनुमति मिली तो मैं भी उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर कर एक आम नागरिक के रूप में इस अमानवीय प्रक्रिया के खिलाफ आवाज उठाऊंगी। मैं एक प्रशिक्षित वकील भी हूं। बनर्जी ने आरोप लगाया कि बिना वैध कारणों के मतदाता सूची से नामों को ''मनमाने ढंग से'' हटाया जा रहा है, जिससे विधानसभा चुनावों से पहले एक नियमित प्रशासनिक प्रक्रिया डर पैदा करने वाली प्रक्रिया बन गई है। उन्होंने दावा किया कि गंभीर रोग से ग्रसित लोगों और बुजुर्ग नागरिकों को यह साबित करने के लिए लंबी कतारों में खड़े होने के लिए मजबूर किया जा रहा कि वे वैध मतदाता हैं।मुञ्यमंत्री ने सवाल किया, ॐअगर कोई भाजपा नेताओं के बूढ़े माता-पिता को पहचान साबित करने के लिए लाइन में खड़ा कर दे, तो उन्हें कैसा लगेगा? जब से एसआईआर शुरू हुआ है, डर से कई लोगों की मौत हो चुकी है और कई अन्य अस्पताल में भर्ती हैं।

हिन्दुस्तान में हिन्दू राज करेंगे ...तो बांग्लादेश बन जाएगा बंगाल- सुवेंदु अधिकारी

कोलकाता ०५/०१ (संवाददाता): राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता ;एलओपीद्ध सुवेंदु अधिकारी ने रामनवमी पर तृणमूल सरकार को चुनौती देते हुए कहा कि भारत में हिंदू शासन करेंगे और 2026 के चुनावों में ममता बनर्जी सरकार जल्द ही सञ्चा से बाहर हो जाएगी। विपक्ष के नेता ने इस बात पर भी जोर दिया कि 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले तृणमूल कांग्रेस द्वारा अल्पसंञ्यक वोट बैंक को खुश करने और एकजुट करने का प्रयास किया जा रहा है और राज्य के विभिन्न हिस्सों में पुलिस द्वारा रामनवमी को रोकने का प्रयास तृणमूल कांग्रेस द्वारा किया जा रहा है।अधिकारी ने दावा किया ष्हिन्दुस्तान में हिन्दू राज करेंगे और जो हिन्दुओं के लिए काम करेंगेए वे पश्चिम बंगाल में राज करेंगे। ममता बनर्जी अगर सञ्चा में रहींए तो राज्य की स्थिति बांग्लादेश जैसी हो जाएगी। उनके शासन के दिन अब गिने.चुने रह गए हैं। हिंदू अब एक समुदाय के प्रति

उनके खुलेआम तुष्टीकरण और रामनवमी उत्सव को कुचलने के प्रयासों को स्वीकार नहीं करेंगे। भाजपा नेता ने कहा कि हिंदुस्तान में हिंदू राज करेंगे और बंगाल में हिंदुओं के कल्याण के लिए काम करने वाले सञ्चा में रहेंगे। दिल्ली भाजपा ने जीत ली है और अब बंगाल की बारी है। ममता बनर्जी को मैंने हराया था। 2026 में भवानीपुर में भाजपा उञ्मीदवार से फिर हारेगी। उन्होंने दावा किया कि हर बार चुनाव से पहले ममता बनर्जी एक खास समुदाय के वोट बैंक को मजबूत करने के लिए फुरफुरा शरीफ जाती हैं। 2016 में वह दस महीने के भीतर विधानसभा चुनाव होने वाले हैं जो दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। दस महीने के भीतर विधानसभा चुनाव होंगे। उन्होंने हिंदू सनातनियों और एससी.एसटी से एक साथ आकर भाजपा को वोट देने का आग्रह किया। उन्होंने कहाए ष्बंगाल को बचाना चाहिए। हिंदुत्व पर हमला हो रहा है और सभी को एक साथ आना चाहिए।ष् उन्होंने दावा किया कि इस साल राम नवमी के दौरान बड़े पैमाने पर जश्न मनाया जाएगा। पिछले सप्ताह कहा था कि छह अप्रैल को रामनवमी के अवसर पर राज्य भर में 20ए000 से अधिक शोभायात्राएं निकाली जाएंगी। भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि बांग्लादेश में अल्पसंञ्यकों पर हुए हमलों की तरहए पिछली दुर्गा पूजा के दौरान राज्य में हिंदू समुदाय के कई पूजा स्थलों में तोड़फोड़ की गई थी।

सिंधु के जल पर पाकिस्तान को लगा नया झटका

नयी दिल्ली ०५/०१ (संवाददाता): केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने चिनाब बेसिन की जल विद्युत परियोजनाओं की समीक्षा की है और सावलकोट परियोजना से 800 मेगावॉट बिजली उत्पादन को प्राथमिक लक्ष्य घोषित किया है। यह साफ संकेत है कि भारत अब अपने प्राकृतिक संसाधनों को लेकर किसी भी तरह की हिचक नहीं रखता। हम आपको बता दें कि अपने दौरे के दौरान केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने राष्ट्रीय जलविद्युत निगम द्वारा विकसित सावलकोट परियोजना से 800 मेगावॉट बिजली सृजन को सुनिश्चित करने की दिशा में स्पष्ट निर्देश दिए। चिनाब नदी पर स्थित यह परियोजना जञ्मू-कश्मीर की सबसे बड़ी जल विद्युत परियोजना के रूप में उभर रही है, तथा इसका लक्ष्य न केवल विद्युत उत्पादन को बढ़ाना है बल्कि क्षेत्र की ऊर्जा आत्मनिर्भरता को भी पूर्ण रूप से सुदृढ़ करना है।

हम आपको बता दें कि खट्टर ने समीक्षा की प्रक्रिया में ह।क्क्ष्ट द्वारा चलाये जा रहे अन्य प्रोजेञ्टों, जैसे कि सेलाल पावर प्रोजेञ्ट और रैटल

हाइड्रोइलेञ्ट्रिक प्रोजेञ्ट पर भी गौर किया। मंत्री ने रैटल परियोजना के डैम कंक्रीटिंग कार्य का शिलान्यास किया और उन्होंने इंजीनियरों से समयबद्ध और गुणवञ्चा नियंत्रित तरीके से कार्य पूरा करने पर जोर दिया। साथ ही, सेलाल परियोजना में जमा गई तलछट को हटाने के लिये भी उन्होंने अधिकारियों को तीव्रता से काम करने के निर्देश दिए, ताकि जल भंडारण क्षमता अधिकतम हो सके और पानी का पूरा उपयोग सुनिश्चित हो सके।

खट्टर ने यह स्पष्ट किया कि इन विद्युत परियोजनाओं के लिये पाकिस्तान की कोई आपञ्ति स्वीकार्य नहीं होगी। उन्होंने कहा कि अब भारत पश्चिमी नदियों के पानी का उपयोग अपने लोगों, अपने उद्योगों और अपनी भूराजनीतिक मजबूती के लिये करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि इन परियोजनाओं में किसी भी अवैध तत्व या ओवर ग्राउंड वर्कर (ह्रत्रङ्ख) को शामिल नहीं होने दिया जायेगा और सभी गतिविधियाँ कानूनी शासन और राष्ट्रीय हित के अनुरूप होंगी। बाइट। देखा जाये तो जञ्मू और कश्मीर में बड़े जल विद्युत प्रोजेञ्टों को आगे बढ़ाने का अर्थ है चीन और पाकिस्तान जैसी पड़ोसी शक्तियों के साथ भौगोलिक संतुलन बनाए रखना और अपनी जल-संरचना को ऐसे मजबूत स्तंभ के रूप में स्थापित करना, जिससे न केवल ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित हो, बल्कि संभावित राजनीतिक प्रतिकूलताओं का सामना करने की क्षमता भी बढ़े।

देखा जाये तो सावलकोट, रैटल और सेलाल जैसे प्रोजेञ्ट केवल बिजली उत्पादन मशीनें नहीं हैं; वे चिनाब नदी के जल भंडारण, नियंत्रण और उपयोग के अत्याधुनिक अवसंरचना केन्द्र हैं। पिछले साल तक सिंधु जल संधि के अंतर्गत पश्चिमी नदियाँ पाकिस्तान के लिये आरक्षित थीं, परंतु वर्तमान नीतिगत बदलाव के साथ भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह अब नदियों के पानी का उपयोग अपने राष्ट्रीय हित के लिये करेगा।इसके अलावा, ऊर्जा उत्पन्न करने की यह क्षमता जञ्मू एवं कश्मीर को देश के ऊर्जा नेटवर्क में एक अहम स्तञ्भ के रूप में स्थापित करेगी। 800 मेगावॉट या उससे अधिक उत्पादन से न केवल स्थानीय आबादी को स्थिर बिजली मिलेगी, बल्कि पूरे उञ्चर भारत की ऊर्जा मांगों को भी भार मिलेगा। यह भारत की कुल ऊर्जा आत्मनिर्भरता को मजबूत करेगा तथा भविष्य में किसी भी संकट का सामना करने में भारत को तैयार रखेगा। देखा जाये तो दशकों तक भारत ने संयम दिखाया, दशकों तक समझौते निभाए, दशकों तक अंतरराष्ट्रीय मंचों की भाषा बोली, पर उस संयम का फायदा पाकिस्तान ने उठाया, उसने आतंक को पाला, पानी पर अधिकार जताया और भारत की सीमाओं पर अस्थिरता को रणनीति बनाया। अब वही भारत कह रहा है कि आपञ्ति स्वीकार नहीं होगी। पाकिस्तान को समझना होगा कि अब समय बदल चुका है, सिंधु जल संधि के तहत भारत को जो अधिकार मिले हैं उनका पूरा उपयोग अब कागज पर नहीं जमीन पर दिखाई दे रहा है। इस सबसे पाकिस्तान की हालत और पतली होनी तय है ञ्योंकि उसकी कृषि व्यवस्था, उसकी बिजली उत्पादन क्षमता और उसका सामाजिक संतुलन, सब कुछ सिंधु प्रणाली पर टिका हुआ है। बहरहाल, जब भारत चिनाब पर भंडारण बढ़ाता है, जब वह गाद हटाकर जलाशयों की क्षमता बढ़ाता है, जब वह रन ऑफ द रिवर की तकनीकी सीमाओं के भीतर रहकर भी अधिकतम नियंत्रण हासिल करता है तो उसमें पाकिस्तान के लिए सञ्त संदेश होता है। साथ ही इस पूरी प्रक्रिया का एक और गहरा असर है जञ्मू कश्मीर में बदलाव। जब बिजली आती है, जब उद्योग आते हैं, जब रोजगार पैदा होता है तो अलगाव की राजनीति अपने आप कमजोर पड़ती है।

डायरिया के 20 नए मामले सामने आए, 9,000 से ज़्यादा लोगों की स्क्रीनिंग के बाद 142 अस्पताल में भर्ती

इंदौर ०५/०१ (संवाददाता): इंदौर के भागीरथपुरा में सीवेज के बैञ्टीरिया शहर की साफ़ पीने के पानी की सप्लाई में मिल जाने से कम से कम 10 लोगों की मौत हो चुकी है और सैकड़ों लोग बीमार पड़ गए हैं, जिससे गंभीर डायरिया और उल्टी का प्रकोप फैल गया है। इंदौर के भागीरथपुरा इलाके में डायरिया फैलने के कारण दूषित पीने के पानी का संकट चिंता का विषय बना हुआ है, जिसमें 142 मरीज़ अभी भी अस्पताल में भर्ती हैं, जिनमें से 11 ढ्ढष्ट में हैं। अधिकारियों ने बताया कि स्वास्थ्य टीमों ने 2,354 घरों में 9,416 निवासियों की स्क्रीनिंग की और डायरिया के 20 नए मामले सामने आए।

न्यूज़ एजेंसी ने बताया कि अब तक छह मौतों की आधिकारिक पुष्टि हो चुकी है। अधिकारियों के अनुसार, बीमारी फैलने के बाद से कुल 398 मरीज़ भर्ती हुए हैं। इनमें से 256 ठीक होकर डिस्चार्ज हो चुके हैं, जबकि बाकी का इलाज चल रहा है। अधिकारियों का कहना है कि स्थिति अब नियंत्रण में है।

मुञ्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. माधव प्रसाद हासानी ने बताया कि कोलकाता में नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च इन बैञ्टीरियल इन्फेञ्शन्स की एक टीम इंदौर पहुंची है। विशेषज्ञ स्वास्थ्य विभाग को बीमारी को फैलने से रोकने और आगे प्रसार को रोकने के लिए तकनीकी मार्गदर्शन दे रहे हैं।

मौतों की संञ्या से राजनीतिक तनाव बढ़ रहा है। प्रशासन ने छह मौतों की पुष्टि की है, जबकि मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने पहले कहा था कि उन्हें 10 मौतों की जानकारी है। स्थानीय लोगों ने दावा किया है कि दूषित पानी के कारण छह महीने के बच्चे सहित 16 लोगों की मौत हुई है। बढ़ते गुस्से के बीच, कांग्रेस ने वरिष्ठ मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के इस्तीफे की मांग करते हुए राज्यव्यापी घंटी बजाकर विरोध प्रदर्शन किया, जिन्होंने संकट के बारे में एक पत्रकार के सवाल का जवाब घंटा शञ्द से दिया, जिससे व्यापक आलोचना हुई। कांग्रेस ने न्यायिक जांच और विजयवर्गीय को हटाने की मांग

की है, जिनके पास शहरी विकास और आवास विभाग हैं और वे इंदौर-1 विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहां भागीरथपुरा स्थित है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने चेतावनी दी कि अगर सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई तो 11 जनवरी को आंदोलन किया जाएगा। पटवारी ने मांग की कि इंदौर के मेयर और नगर निगम अधिकारियों के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज किया जाए। उन्होंने पत्रकारों से कहा, सोलह लोगों की मौत हो गई है। ये मौतें उस जनादेश की हत्या हैं जो लोगों ने पिछले चुनावों में भाजपा को दिया था,ॐ उन्होंने दूषित नल के पानी के बारे में सार्वजनिक शिकायतों की लंबे समय तक अनदेखी का आरोप लगाया।

पड़ोसी देवास में, एक सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट को विरोध प्रदर्शन से जुड़े एक आधिकारिक आदेश में एक मंत्री की विवादास्पद टिप्पणी और कांग्रेस के आरोपों का ज़िक्र करने के लिए सस्पेंड कर दिया गया। उज्जैन संभाग के राजस्व आयुक्त आशीष सिंह ने गंभीर लापरवाही और अनियमितताओं के आधार पर अधिकारी को सस्पेंड कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि स्ष्ठरूने कांग्रेस के ज्ञापन का एक हिस्सा हूबहू सरकारी आदेश में कॉपी कर दिया था। जल संरक्षणवादी और मैग्सेसे पुरस्कार विजेता राजेंद्र सिंह ने इस त्रासदी को सिस्टम द्वारा बनाई गई आपदा बताया। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर इंदौर जैसे शहर में, जिसे लगातार भारत का सबसे स्वच्छ शहर माना जाता है, ऐसा संकट आ सकता है, तो दूसरे शहरों में पीने के पानी की व्यवस्था की हालत और भी ज़्यादा चिंताजनक होगी।

सिंह ने आरोप लगाया कि खराब इंफ्रास्ट्रक्चर प्लानिंग के कारण सीवेज का पानी पानी की मेन पाइपलाइन में घुस गया था। उन्होंने कहा, पैसे बचाने के लिए, ठेकेदार पीने के पानी की पाइपलाइन को ड्रेनेज लाइनों के बहुत पास बिछाते हैं,ॐ और कहा कि भ्रष्टाचार ने पूरे सिस्टम को खोखला कर दिया है।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

पशुपालन के बिना संभव नहीं टिकाऊ खेती

कृषि कार्य से धन अर्जन प्राचीन समय से किया जा रहा है प्राचीन सभ्यताएं स्वावलम्बी कृषि पर ही निर्भर रहीं। जब भी कृषि में स्वावलंबन समाप्त हुआ सभ्यताएं गिर गई। स्वावलम्बी कृषक बाहर के आदानों का मूल्य नहीं चुकाता है, वह उन्हें स्वयं उत्पादित करता है। स्वावलम्बन का अर्थ है पर्याप्त उत्पादन करना, पैसा कमाना तथा विपत्ति के दिनों के लिये बचाकर रखना है।

भारत के किसान अपने परम्परागत ज्ञान को परिमार्जित करते हुए कृषि कार्य द्वारा मिट्टी से सोना बनाने का कार्य करता रहे, परन्तु आज पाश्चात्य कृषि शिक्षा का प्रभाव, हरित क्रांति की चकाचौंध, कृषि के मशीनीकरण, रसायनिक खाद एवं कीटनाशकों के तात्कालिक लाभों को देखकर भारतीय किसान कृषि के स्वावलम्बन से दूर होकर रसायनिक खेती अपनाने लगा। किसान अधिक उपज लेने के लिये आवश्यकता से अधिक उर्वरक एवं रसायनिक दवाओं का प्रयोग करने लगा जिससे उत्पादन में बढ़ोत्तरी अवश्य होती है परन्तु साथ ही साथ प्रति हेक्टेयर खर्चा भी बढ़ता जा रहा है। इससे न केवल किसानों की आय में कमी देखी जा रही है बल्कि पर्यावरण पर भी विपरीत असर होता दिखाई दे रहा है। पिछले चार दशकों में कृषि रसायनों (खाद, कीटनाशक, नींदानाशक, और बढ़वार कारकों) और पानी के अविवेकीय अन्धाधुन्ध उपयोग ने मृदा उर्वरता, कृषि उत्पादकता के कारकों, उत्पाद गुणवत्ता एवं पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डाला है। रसायनिक खेती या गहन कृषि पद्धति की ओर प्रेरित किया है क्योंकि विश्व की जनसंख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है और खाद्यान्न की आवश्यकता में भी वृद्धि होती जा रही है। रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से कृषि योग्य भूमि में निम्ननिखित परिणाम देखने को मिले हैं।

- भूमि की सतह का सख्त होना।
- लाभप्रद जीवाणुओं की संख्या में कमी।
- भूमि की जलधारण क्षमता में कमी।
- मृदा की क्षारीयता, लवणता तथा जलागम में वृद्धि।
- भूमि में जीवाश्म की मात्रा में कमी।
- फसलों में कीट, व्याधियों व खरपतवारों की समस्या में वृद्धि ।
- भूमि की उत्पादकता में निरन्तर कमी।

उपरोक्त कारणों की वजह से आज कृषक को खेती घाटे का सौदा बनती जा रही है। आज हमारे विश्व की जनसंख्या लगभग 6 अरब है व सन् 2050 तक इसका 9 अरब होने का अनुमान है। लेकिन हमारी कृषि उत्पादकता बढ़ने की बजाय स्थिर हो गई है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए कृषि वैज्ञानिक आधारित या टिकाऊ खेती करने पर जोर दे रहे हैं।

टिकाऊ खेती से तात्पर्य फसल एवं पशुपालन उत्पादन के एकीकरण तंत्र से है। जो लम्बे समय तक निम्न बातें पूर्ण कर सके।

- मनुष्य के भोजन की पूर्ति कर सके।
- वातावरण की गुणवत्ता एवं प्राकृतिक संसाधनों को बचायें।
- उन सभी संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग हो जिनका पुर्नउत्पादन नहीं हो सकता है।
- भूमि की आर्थिक उपयोगिता को बनाये रखें।
- कृषक व समाज के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाएं।

इस प्रकार से टिकाऊ खेती में वह सभी बातें समाहित हैं जिससे वातावरण सुधरे, आर्थिक लाभ हो एवं समाज में समानता आए। यहां पशुपालन की टिकाऊ खेती में बराबर की हिस्सेदारी है क्योंकि पशुओं की कृषि में आर्थिक उपयोगिता है, व साथ ही ये चराहाग एवं फसलों के अवशेषों आदि को मनुष्य को खाने योग्य बनाने में मदद करते हैं। टिकाऊ खेती का सबसे उत्तम उपाय है जैविक खेती। जैविक खेती से तात्पर्य है कि खेती में रसायनिक खाद, कीटनाशक व जैविक वृद्धिकारकों का उपयोग करके उत्पादन लिया जाय। जैविक खाद बनाने के लिये पशुओं की आवश्यकता पड़ेगी। क्योंकि पशुओं से ही गोबर, मलमूत्र इत्यादि प्राप्त होंगे।

इसके अतिरिक्त मुर्गी खाद भी भूमि की उर्वराशक्ति को बढ़ाने में काफी मदद करती है, क्योंकि मुर्गी खाद में लगभग 20 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है। जिससे इस खाद में नाइट्रोजन की मात्रा अधिकतम लगभग 3 प्रतिशत व फास्फोरस एवं पोटाश क्रमशः 2-2 प्रतिशत होती है। वहीं सुअर के मल में नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश क्रमशः 0.7, 0.6 एवं 0.7 प्रतिशत पाए जाते हैं।

इसके अतिरिक्त जैविक खेती में विभिन्न खादों जैसे गोबर व फसल अवशेष के मिश्रण से खाद (नाडेप या कम्पोष्ट खाद), गोबर गैस संयंत्र से उपलब्ध खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट आदि का उपयोग होता है। वर्मी कम्पोस्ट केंचुए की मदद से बनने वाला खाद है। एक क्विंटल ताजा वर्मी कम्पोस्ट से भूमि को 800 ग्राम पोटेशियम प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त इसमें सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे कि जस्ता 0.16: तांबा 0.09 और लोहा 1.38 अनुपात होते हैं।

इसमें कुछ पादप हार्मोन्स और एन्टीबायोटिक्स भी होते हैं जो कि फसल की अच्छी पैदावार एवं पौध संरक्षण को बढ़ावा देते हैं। वर्मी कम्पोस्ट की अम्लीयता क्षारीयता 6.8 से 7.2 के बीच होती है। इसमें मृदा का तापमान संतुलित रहता है व मिट्टी में पानी सोखने की प्रवृति बढ़ती हैं। इसके अतिरिक्त मुख्य उपयोग पशु का ये है कि वह जमीन जो कि अत्यंत अनउपजाऊ एवं बंजर होती है उसको भी उपजाऊ बनाने में मदद करते हैं।

उपरोक्त के अलावा टिकाऊ खेती में प्राकृतिक संसाधनों का भी प्रभावी ढंग से उपयोग करना है। इसके लिये हम पशु ऊर्जा का उपयोग मशीनी ऊर्जा के स्थान पर कर सकते हैं। पशु ऊर्जा का उपयोग क्यों करना चाहिए यह निम्न बातों से स्पष्ट होता है-

- पशुओं का उपयोग किसान की कार्यक्षमता को बढ़ाता है। यह फसलों के विविधीकरण कृषि क्षेत्र को बढाने एवं समय पर कृषि कार्यों को सम्पन्न करने में सहायक है।
- मशीनों पर आधारित उत्पादन तन्त्र कुछ ही फसलों तक सीमित रह जाता है और इस तरह विविधता को तहस-नहस कर देता है।
- पशु चलित यन्त्र सस्ते, सुलभ और गांवों में भी बनाये जा सकते हैं।
- पशु ऊर्जा का उपयोग मंहगे और अनवीनीकरण ईंधन पर होने वाले खर्च को बचाना है। पशु खेतों से ही आने वाले फसलों के अवशेष को खाकर उसे उपयोगी चीजों जैसे- दुग्ध, बायोगैस, खाद इत्यादि में बदल देते हैं, और ये भोजन के लिये मानव के प्रतियोगी भी नहीं है।
- ऊर्जा पशुओं का उपयोग पशुओं को फसलोत्पादन से जोड़ने में किसानों की मदद करता है। इस तरह पशुओं की शक्ति का फसलोत्पादन निरन्तर बनाये रखने के लिये दोहन होता रहता है।

- एक बार ट्रैक्टर या पावर टिलर की जीवन अवधि जो कि प्रायः बहुत छोटी होती है, समाप्त हो जाती है तो उसका कोई प्रयोगात्मक उपयोग नहीं रह जाता है। पशु उस पर किये गये खर्च को कई तरह से लौटाता है। वह जीवनभर व मृत्यु उपरान्त भी पशु पालकों को अनेक उपयोगी चीजें देता है। मशीनों के साथ किसानों के कर्ज में फंसने का डर बना रहता है। यदि बढ़ी ऋण सहायता से मशीनीकरण पूर्ण हो भी जाये तो अधिकतर कृषक आबादी अपनी भूमि छोड़ने के लिये बाध्य हो जायेगी। क्योंकि मशीनों की सहायता से बड़े से बड़ा क्षेत्र कुछ ही हाथों द्वारा तैयार किया जा सकता है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि टिकाऊ खेती में पशुओं का बहुत बड़ा योगदान है जिसको अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

गोभीवर्गीय में पोषक तत्वों की आवश्यकता

भूरापन या ब्राउनिंग

यह समस्या गोभीवर्गीय फसलों में बोरान की कमी से होता है।

लक्षण

भूरापन में शुरूआत में फूल में जल अवशोषित धब्बे पड़ जाते हैं, जो कि बाद में बड़े हो जाते हैं। इसके बाद तने में भी जल अवशोषित धब्बे पड़ते हैं तथा तना अंदर से खोखला हो जाता है। यदि भूरापन का प्रकोप ज्यादा होता है तो पूरा फूल में कुछ दिन बाद गुलाबी या भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं।

उपचार

बोरान की कमी को दूर करने के लिये 10-15 किलो बोरेक्स प्रति हेक्टर भूमि में पौध रोपण के समय देना चाहिए अथवा जब फसल खड़ी हो 0.1 प्रतिशत बोरेक्स घोल का छिड़काव करना चाहिए प्रथम छिड़काव पौध रोपण के दो सप्ताह पश्चात और दूसरा छिड़काव फूल बनने से दो सप्ताह पहले करना चाहिए।

व्हिपटेल

यह लक्षण गोभीवर्गीय फसलों में मालीब्डिनम नामक तत्व की कमी के कारण होता है।

लक्षण

मुख्यतः मालीब्डिनम की कमी अम्लीय भूमि में हो जाती है अर्थात् मालीब्डिनम अनुपलब्ध रूप से हो जाता है, जिससे पौधे इस तत्व का अवशोषण नहीं कर पाते और व्हिपटेल के लक्षण दिखाई देते है, इसमें शुरूआत में पौधे की वृद्धि रुक जाती है और पत्तियाँ सिकुड़ कर सफेद पड़ने लगती हैं तथा कुछ दिन बाद पत्तियां अपना आकार खो देती हैं और मिडरिब के अलावा शेष भाग सूख जाता है, जिसके कारण इसे सामान्यतः व्हिपटेल कहा जाता है।

उपचार

मालीब्डिनम की कमी को दूर करने के लिए अम्लीयता कम करने के उद्देश्य से 50-70 क्विंटल बुझा चूना प्रति हेक्टर खेत की तैयारी के समय भूमि में मिला देना चाहिए। इसके साथ ही पौध रोपण के पहले 2.5 से 5 किलो सोडियम मालीब्डेट प्रति हेक्टर भूमि में मिला देना चाहिए अथवा खड़ी फसल में 0.05ः सोडियम मालीब्डेट घोल का पौधों पर छिड़काव करना चाहिए।

बटनिंग

बटनिंग की समस्या गोभी वर्गीय फसलों के कई कारणों से होती है जैसे अधिक उम्र के रोप के कारण, नाइट्रोजन की कमी के कारण या समय के अनुसार उचित किस्मों को ना लगाने से ऐसा होता है।

लक्षण

फूलों का विकसित ना होकर छोटा रह जाना बटनिंग कहलाता है। इसमें फूलों का आकार छोटा हो जाता है तथा कम विकसित पत्तियाँ होती हैं।

उपचार

बटनिंग को रोकने के लिये अगेती या पिछेती किस्में अनुशंसित समय पर ही लगाएं, पौधे की वृद्धि चाहे वह नर्सरी में हो या खेत में नहीं रूकनी चाहिए। अधिक सिंचाई न करें। जो पौधा नर्सरी में अधिक दिन के हो उन्हें खेत में न लगाएं और नाइट्रोजन की उचित मात्रा पौधों को समय-समय पर दें।

रेसीयनेस

रेसीयनेस के लक्षण मुख्यतः वातावरण में अनुकूल तापमान की कमी, अधिक नाइट्रोजन देने के कारण तथा अधिक आर्द्रता के कारण होती हैं।

लक्षण

समय से पूर्व अविकसित कली को रेसीयनेस कहते हैं। इसमें फूल की ऊपरी सतह ढीली पड़ जाती है तथा सफेद छोटी कलिका बन जाती है।

उपचार

रेसीयनेस से उपचार के लिये उचित किस्म का चयन करें, समय पर पौधों की रोपाई करें, नाइट्रोजन की उचित मात्रा का प्रयोग करें तथा प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।

अन्धता

अन्धता गोभीवर्गीय फसलों से पौधे की वृद्धि के शुरूआत मुख्य कलिका में कीट के प्रकोप के कारण तथा वातावरण में तापमान में कमी होने वाला पाला पड़ने के कारण होता है।

लक्षण

अन्धता में पौधे की मुख्य कलिका कीट के कारण क्षतिग्रस्त हो जाती है तथा इसके पत्ते बड़े, चमड़े जैसे मोटे और गहरे रंग के हो जाते हैं।

उपचार

अन्धता की रोकथाम के लिए मुख्य कलिका को कीटों से क्षतिग्रस्त होने से बचाने के लिये कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिए, उचित किस्म का चयन करना चाहिए।

कलिंग समाचार

संपादकीय

मंगलवार 06 जनवरी 2026

बांग्लादेश की स्थिरता भारत के लिए जरूरी

पिछले साल शेख हसीना सरकार के गिरने और मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार बनने के बाद से भारत और बांग्लादेश के संबंध अपने सबसे खराब दौर से गुजर रहे हैं। कड़वाहट और अविश्वास इतना अधिक बढ़ गया है कि दोनों देशों के बीच फिलहाल वीज़ा सेवाओं पर अस्थायी रोक लगा दी गई है। इस आग में घी डालने का काम दोनों देशों में बैठे कट्टरपंथी नेता कर रहे हैं। पड़ोस में कट्टर दुश्मन की तरह एक पाकिस्तान हमारे लिए मानो काफी नहीं था कि अब बांग्लादेश के साथ संबंध भी उसी नफरत की राह पर बढ़ रहे हैं। ऐसे में 1971 में अमेरिका समेत पश्चिमी देशों की भारत को पस्त होते और चौतरफा घिरे देखने की जो हसरत पूरी नहीं हुई थी, उसे अब पूरी करने की कोशिशें हो रही हैं। सोमवार को भारत में अमेरिका के राजदूत और दक्षिण और मध्य एशिया के लिए विशेष दूत सर्जियो गोर से मोह मद यूनुस की फोन पर करीब आधे घंटे तक बात हुई। जिसमें यूनुस ने भारत में शरणागत शेख हसीना पर नए आरोप लगाए कि हसीना के समर्थक कथित तौर पर चुनावी प्रक्रिया को पटरी से उतारने के लिए लाखों डॉलर खर्च कर रहे हैं और उनकी फरार नेता विदेश से हिंसा भड़का रही हैं। बता दें कि शेख हसीना को बांग्लादेश में मृत्युदंड मिला है और वह उनका प्रत्यर्पण चाहता है। लेकिन भारत इसकी अनुमति नहीं दे रहा। वहीं यूनुस पर बार-बार आरोप लग रहे हैं कि वो चुनाव टालना चाहते हैं, लेकिन यूनुस ने अमेरिका को बताया कि चुनाव अगले साल 12 फरवरी को समय पर होंगे। अमेरिकी दूत के साथ चर्चा में शेख हसीना पर चुनाव रोकने का इल्जाम लगाकर शायद इस बात की पृष्ठभूमि तैयार की जा रही है कि उनकी पार्टी अवामी लीग चुनावों से बाहर रहे। ध्यान रहे कि भारत ने हाल ही में कहा है कि वह बांग्लादेश में शांतिपूर्ण माहौल' में स्वतंत्र, निष्पक्ष, समावेशी और विश्वसनीय चुनावों के पक्ष में है। इसमें समावेशी का मतलब चुनाव प्रक्रिया में हसीना की अवामी लीग को भी शामिल करना है। लेकिन बांग्लादेश सरकार ने अपने बयानों में समावेशी शब्द का उल्लेख नहीं किया है। उसने कहा है कि वह सर्वोच्च मानकों वाले चुनाव कराना चाहती है, जिनका पिछले 15 सालों से अभाव रहा है। यानी फिर से शेख हसीना को निशाने पर लिया जा रहा है। वहीं बांग्लादेश के विदेश मामलों के सलाहकार तौहीद हुसैन ने कहा है कि हम यह नहीं चाहते कि पड़ोसी देश हमें यह सलाह दे कि बांग्लादेश में चुनाव कैसे कराए जाने चाहिए। बांग्लादेश को बेशक अपनी संप्रभुता के लिए बोलने का हक है, लेकिन उसे भू राजनैतिक परिस्थितियों पर भी गौर करना चाहिए। बांग्लादेश की 94 प्रतिशत सीमा भारत से लगती है। एक देश की उथल-पुथल दूसरे को भी प्रभावित करती है, इसलिए 4,000 किलोमीटर की साझा सीमा पर सुरक्षा और शांति दोनों देशों के लिए जरूरी है। बांग्लादेश लगभग चारों तरफ़ से भारत से घिरा हुआ है। सुरक्षा और व्यापार के मामले में वह भारत पर निर्भर है। वहीं बांग्लादेश से भारत को पूर्वोत्तर के राज्यों में सस्ते और सुलभ संपर्क में मदद मिलती है। पूर्वोत्तर के राज्यों से बाक़ी भारत को जोड़ने में बांग्लादेश की अहम भूमिका है। बांग्लादेश की राजनैतिक अस्थिरता और कट्टरपंथी ताकतों का दबदबा भारत के लिए ज्यादा चिंता की बात है, क्योंकि इसी बहाने एक तरफ पाकिस्तान और चीन और दूसरी तरफ अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस जैसे पश्चिमी देश इसमें अपने दखल का मौका तलाश रहे हैं। पिछले ह ते ही भारत विरोधी कट्टरपंथी छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी की मौत के बाद पश्चिमी देशों ने शोक प्रकट किया, लेकिन हिंदू अल्पसं यक युवा दीपू दास की मॉब लिंचिंग और नृशंस हत्या पर मौन धारण किया। अभी बेशक संयुक्त राष्ट्र ने इस तरह की हिंसा रोकने का आह्वान किया है, वहीं अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के दो सदस्यों राजा कृष्णमूर्ति और सुहास सुब्रमण्यम ने भी ढाका में अल्पसं यक समुदायों पर हमलों को चिंताजनक कहा है। लेकिन बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने तो दीपू दास की लिंचिंग को अल्पसं यकों पर हमले के रूप में पेश किए जाने को ही खारिज कर दिया है। इस बीच अकेले रूस ने फिर से भारत का साथ दिया है।

बढ़ता उत्पादन, घटता खर्च, पर्यावरण की रक्षा-इन किसानों से हम क्या-क्या सीखें

भारत डोगरा

आज हमारे किसानों के सामने तेजी से बढ़ते खर्च और कर्ज की परेशानी है। रासायनिक खाद से उत्पादकता अपेक्षा के अनुकूल बढ़ नहीं रही है जिसका एक बड़ा कारण यह है कि इसके अत्यधिक उपयोग से पहले ही मिट्टी व पर्यावरण की बहुत क्षति हो चुकी है। कई स्तरों पर खेती व गांव का बिगड़ता पर्यावरण किसानों की इन समस्याओं को और बढ़ा रहा है। आखिर कोई तो बात होगी कि इस दलित किसान की खेती को आसपास के कई किसान देखने-समझने आते हैं व सरकारी स्तर पर उन्हें पुरस्कार भी दिया गया है व प्रशिक्षण देने के लिए भी बुलाया जाता है। जब यह लेखक टीकमगढ़ जिले (मध्य प्रदेश) के लिधोराताल गांव में बालचंद अहीरवार से बातचीत करने पहुंचा तो यह समझने में देरी नहीं लगी कि इस मेहनती, निष्ठावान किसान की खेती किसानों व अधिकारियों को क्यों आकर्षित कर रही है।

आज हमारे किसानों के सामने तेजी से बढ़ते खर्च और कर्ज की परेशानी है। रासायनिक खाद से उत्पादकता अपेक्षा के अनुकूल बढ़ नहीं रही है जिसका एक बड़ा कारण यह है कि इसके अत्यधिक उपयोग से पहले ही मिट्टी व पर्यावरण की बहुत क्षति हो चुकी है। कई स्तरों पर खेती व गांव का बिगड़ता पर्यावरण किसानों की इन समस्याओं को और बढ़ा रहा है। बालचंद, उनकी पत्नी गुड्डी और परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से जो खेती अपने मात्र 2 एकड़ के खेत पर कर रहे हैं, उसकी बड़ी उपलब्धि यह है कि किसान संकट उत्पन्न करने वाली इन सभी समस्याओं का समाधान उनकी खेती में एक साथ नजर आ रहा है। अपने छोटे खेत व उससे जुड़े कार्यों के बल पर ही बालचंद और गुड्डी परिवार को बहुत स्वस्थ खाद्य खिला रहे हैं व अपने दोनों बेटों को शहर के कालेज में पढ़ा रहे हैं। इनकी मेहनत और रचनात्मकता की प्रशंसा करनी होगी कि मात्र 2 एकड़ के खेत में एक वर्ष में 44 तरह के खाद्य उगाते हैं जिनमें अनाज, दलहन, तिलहन, मसाले, फल, फूल सब्जी सभी कुछ है। बहुत से फलदार व अन्य पेड़ भी हैं। मु य फसल गेंहू व मूंगफली है। इसके साथ कुछ स्थान पर वे बहुस्तरीय बगीचा लगाते हैं जिसमें जमीन के नीचे, छोटे व बड़े पौधों पर, बांस तथा रस्सी पर बढ़ रही बेलों पर बहुत सी सब्जियां लगाते हैं। वर्ष भर पौष्टिक खाद्य मिलते रहते हैं व बिक्री के लिए भी कुछ न कुछ निकलता रहता है। यह सभी कार्य प्राकृतिक खेती पद्धति से किए जाते हैं। इसके अन्तर्गत रासायनिक खाद, कीटनाशक दवा व खरपतवारनाशक दवा आदि का उपयोग बिल्कुल नहीं किया जाता है। इसके स्थान पर अपने ही खेत में गोमूत्र, गोबर व स्थानीय पेड़ों की कड़वी पत्तियों आदि से हानिकारक कीड़ों को दूर रखने वाली दवा तैयार की जाती है। इस तरह बालचंद ने एक एकड़ में खेती का खर्च 6000 रुपए से कम कर 500 रुपए कर लिया है। वह बताते हैं कि हम छोटे किसान हैं, हमें ट्रैक्टर की जरूरत नहीं, हमारा काम तो पावर ट्रिलर से हो जाता है जो मिट्टी के लिए भी अच्छा है। इन तौर-तरीकों से मिट्टी सुधर रही है व उपजाऊपन बढ़ रहा है। बालचंद ने मिट्टी खोदकर दिखाया कि अब इसमें कितने केंचुए आ गए हैं जो निरंतर अपनी प्राकृतिक प्रक्रियाओं से मिट्टी का उपजाऊ और भुरभुरा बनाए रखते हैं।

बालचंद और गुड्डी ने एक कदम आगे चलकर सोचा कि हम अन्य किसानों के लिए भी यह राह क्यों न आसान करें? अतः सृजन संस्था से सहायता प्राप्त कर उन्होंने एक ऐसा प्राकृतिक कृषि केन्द्र अपने खेत पर ही स्थापित किया जिससे वे अपनी जरूरत के अतिरिक्त भी प्राकृतिक खाद व हानिकारक कीड़े दूर रखने की दवा तैयार कर सकते हैं ताकि अन्य पड़ोस के किसान (जो किसी कारण से यह स्वयं तैयार नहीं कर सकते हैं) वे अपेक्षाकृत कम कीमत पर यह उनसे खरीद सकें। इसके अतिरिक्त बालचंद को प्राकृतिक कृषि के प्रशिक्षक के रूप में भी आमंत्रित किया जाता है व इस अवसर का भरपूर उपयोग कर वे प्राकृतिक खेती का संदेश फैलाते हैं।

वे दो संदेश विशेष तौर पर पहुंचाना चाहते हैं। पहली बात तो यह है कि जिस तरह की प्राकृतिक व दर्जनों उपज वाली मिश्रित खेती वे कर रहे हैं, वह बहुत मेहनत और निष्ठा से ही हो सकती है। यदि मेहनत और खेती के प्रतिनिष्ठा नहीं है, वहां सफलता मिलनी कठिन है। साथ में वे समझते हैं कि ऐसी रचनात्मक मेहनत थकाती नहीं है अपितु प्रसन्न रखती है क्योंकि आप निरंतर कुछ बेहतर करने की सोच रहे हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात बालचंद व गुड्डी ने यह समझाई कि किसान के लिए नशे से दूर रहना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि सारा हिसाब-किताब बिगड़ जाएगा यदि रोज-रोज मेहनत का पैसा शराब, तंबाकू व अन्य तरह के नशे में जाने लगे। अतः बालचंद अपने को हर तरह के नशे से दूर रखते हैं।

इस तरह के अनेक अन्य छोटे किसान भी प्राकृतिक खेती की राह चलते हुए बड़ी उ मीद जगा रहे हैं। इसी तरह के एक-एक किसान हैं भील आदिवासी किसान मालीराम व उनकी पत्नी दुलकी बाई। जब यह लेखक प्रतापगढ़ जिले (राजस्थान) के उनके गांव कटारों का खेड़ा में गया तो मालीराम जी को अपने पौधों और पेड़ों के बीच में बहुत मस्त पाया। उन्होंने बताया कि वे अपने तीन बीघे के खेत में प्राकृतिक खेती पद्धति से 15 तरह की सब्जियां सहित लगभग 25 तरह की फसल उगाते हैं व इसके अतिरिक्त उनके खेत में अमरूद, पपीते, आंवले, नींबू, कटहल, चंदन आदि के लगभग 200 पेड़ हैं। उनके पास गाय, बैल, बकरियां व मुर्गियां हैं। खेती बैलों से होती है। इन पशु-पक्षियों से पर्याप्त व अच्छी गुणवत्ता की खाद प्राप्त होती है। पूरे खेत का नियोजन इस तरह है कि कुछ भी व्यर्थ न हो। यहां का अवशेष वहां पर संसाधन के रूप में उपयोग हो जाता है। मालीराम अपनी खेती में इतने मग्न हैं कि वह बाहर से आए मित्र को एक-एक क्यारी व पौधा दिखाना चाहते हैं, बताना चाहते हैं कि उन्होंने क्या प्रयोग किया व उसका कितना अच्छा परिणाम उन्हें मिला। अमेरिकी किसान व दार्शनिक वैंडल बेरी ने लिखा है कि अच्छा किसान वह है जो आराम करते समय भी खेती को बेहतर करने के बारे में सोचता है। मालीराम से बातचीत करते हुए मुझे अनायास ही बैरी के इस कथन की याद आई क्योंकि बैरी के अनुरूप ही किसान मेरे सामने था।

मालीराम ने बताया कि पहले वे भी रासायनिक खाद के जाल में फंस गए थे, पर अपनी गलती का अहसास उन्हें शीघ्र ही हो गया और वे उससे पीछे हट गए। उन्होंने अपने तीन बीघा के खेत को एक-एक बीघा कर तीन वर्षों में प्राकृतिक खाद से उपचारित किया ताकि इसकी मिट्टी का प्राकृतिक उपजाऊपन लौट सके। फिर उन्होंने अपने भाई को भी प्राकृतिक खेती के लिए कहा व उसने अब यह स्वीकार भी कर लिया है।

शशि प्रजापति निवाड़ी जिले (मध्य प्रदेश) की ऐसी किसान हैं जिन्होंने अपनी खेती सुधारने के साथ-साथ पूरे गांव की खेती सुधारने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके गांव कु दार में पुरनिया तालाब की सफाई कर इसकी मिट्टी-गाद से खेतों का उपजाऊपन बढ़ाया गया। इस पूरे प्रयास से गांववासियों को जोड़ने व इसकी प्रगति का रिकार्ड रखने में शशि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। शशि ने अपने खेत में प्राकृतिक कृषि केन्द्र स्थापित कर गांव के अन्य किसानों को भी प्राकृतिक खाद व हानिकारक कीड़ों को दूर रखने की प्राकृतिक दवा उपलब्ध करवाई। शशि प्रजापति के खेत पर एक प्रदर्शन प्लाट भी आरंभ किया गया जहां कृषि के प्रयोगों का प्रदर्शन किया जाता रहा है। इतना ही नहीं, शशि ने बकरियों व अन्य पशुओं का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया जिससे गांव के पशुओं का इलाज व बीमारी से बचाव के उपाय संबंधी जानकारी गांव में ही उपलब्ध हो सके। इन तीनों उदाहरणों में एक सामान्य बात यह है कि इन किसानों ने जिस तरह से खर्च कम करते हुए, उत्पादन बढ़ाया है उसके साथ मिट्टी व पर्यावरण की रक्षा भी जुड़ी है। जलवायु बदलाव के संकट को कम करने व उसका बेहतर सामना करने की क्षमता (मिटिगेशन एंड एडाप्टेशन) भी उनके प्रयासों से बढ़ी है। अतः यदि जलवायु बदलाव के संकट के समाधान के लिए राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे किसानों को सहायता उपलब्ध होती है, तो ऐसी किसानी का हिसाब-किताब और भी अनुकूल हो जाएगा व किसानों की आजीविका और भी टिकाऊ व मजबूत हो जाएगी।

दूसरी मु य बात यह है कि इन तीनों किसानों की सफलता में सृजन संस्था ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दूसरी ओर इन किसानों ने भी अपनी रचनात्मकता के आधार पर इस सहयोग में उ मीद से भी बेहतर परिणाम दिए हैं।

सर-शुद्धीकरण का नाम, ध्वस्तीकरण का काम!

राजेंद्र शर्मा

बेशक, मतदाता सूचियों में सुधार की जरूरत से और सुधार की गुंजाइश से कोई इंकार नहीं कर सकता है। मिसाल के तौर पर अगर मृतकों के नाम मतदाता सूचियों में हैं या एक ही मतदाता एक से ज्यादा स्थानों पर मतदाता बना हुआ है, तो इन त्रुटियों को दूर करना जरूरी है। लेकिन, सर के रूप में जिस तरह से नये सिरे से मतदाता सूचियां बनाने की कसरत शुरू की गयी है और वह भी मनमाने आधार वर्ष लेकर तथा उससे भी ज्यादा मनमानी समय-सूचियां तथा साक्ष्य व पद्धतियां थोपकर, उसने सारी प्रक्रिया को ही पूरी तरह से प्रदूषित कर दिया है।

आखिरकार, मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण या सर के नाम पर, थोक में लोगों के मताधिकार की चोरी की आंच, खुद सत्ताधारी संघ-भाजपा परिवार के घर तक भी पहुंच ही गयी। पिछले ही दिनों, देश के सबसे बड़े राज्य, उत्तर प्रदेश के मु यमंत्री आदित्यनाथ ने, सार्वजनिक रूप से मतदाता सूचियों के तथाकथित शुद्धीकरण के चक्कर में, इस राज्य में हरेक चौथाई वोटर का नाम कट जाने का खतरा बताकर, सत्तापक्ष और विपक्ष, सभी को चौंका दिया। सत्ताधारी कबीले की अंदरूनी रस्साकशी के अनुमानों को हम अगर छोड़ भी दें तो भी, उत्तर प्रदेश के मु यमंत्री मतदाता सूचियों में कथित सुधार की इस कसरत में, जिस पैमाने पर वोट काटे जाने का आरोप लगा रहे थे, उस पैमाने पर वोट काटे जाने के आरोप तो विपक्ष ने भी नहीं लगाए थे, हालांकि विपक्ष शुरू से ही यानी बिहार में, चुनाव से ऐन पहले सर की यह प्रक्रिया शुरू किए जाने की मंशा से लेकर वैधता तक पर सवाल उठाता रहा था। इसमें विपक्ष द्वारा सर्वोच्च अदालत में इस प्रक्रिया की संवैधानिक वैधता को चुनौती दिया जाना भी शामिल है, जिस पर विचार करने के लिए अदालत अब तक समय ही नहीं निकाल पायी है। याद रहे कि उसी सर प्रक्रिया के इस समय जारी दूसरे चरण में, जिसमें कुल बारह राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों का कथित शुद्धीकरण हो रहा है, उत्तर प्रदेश में ही मु य विपक्षी पार्टी, समाजवादी पार्टी ने राज्य में करोड़ों वोट तक काटे जाने की आशंका जतायी थी। भाजपायी मु यमंत्री ने तो और भी बड़ा दावा कर दिया और चार करोड़ वोट कटने का खतरा बता दिया।

और मु यमंत्री आदित्यनाथ कोई हवा में दावा नहीं कर रहे थे बल्कि तथ्यों के साथ बोल रहे थे। उन्होंने याद दिलाया कि 2025 की जनवरी में हुए मतदान सूचियों के समरी रिवीजन तक, राज्य में 15 करोड़ 44 लाख मतदाता थे। इसमें अगर, वर्तमान पुनरीक्षण के लिए निर्धारित मतदाताओं के नाम जोड़ने की अंतिम तिथि, 31 जनवरी 2026 तक, अठारह वर्ष पूरे कर मताधिकार के पात्र हो जाने वालों की सं या को भी जोड़ दिया जाए तो, राज्य में मतदाताओं की सं या 16 करोड़ बैठती है। लेकिन, 14 दिसंबर को मु यमंत्री के यह मुद्दा उठाए, जाने तक, जोकि मतदाताओं के नामांकन फार्म भरने की मूल अंतिम तारीख थी, हालांकि बाद में इस समय सूची की अव्यावहारिकता का शोर मचने के बाद, यह अंतिम तारीख एक ह ता बढ़ा दी गयी थी, केवल 12 करोड़ मतदाताओं के नामांकन फार्म जमा हो पाए थे। इस तरह, पूरे 4 करोड़ मतदाताओं के नाम कट सकते थे। बेशक, आदित्यनाथ ने यह डरावनी तस्वीर पेश करने के लिए, सत्ताधारी पार्टी के कार्यकर्ताओं से इसकी अपील करने का बहाना बनाया था कि, जिन लोगों के नाम छूट रहे हैं उनके नाम जुड़वाने में उन्हें प्राण-पण से जुटना होगा। वे अगर इसके लिए तत्परता से नहीं जुटे तो, राज्य में चौथाई वोटर कट जाएंगे। यही नहीं, उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं को यह भी याद दिलाया था कि यह सोचकर नहीं बैठ जाएं कि %%दूसरों%% के ही वोटर हैं, जिनका नाम कट रहा है। इशारा साफ तौर पर इस प्रक्रिया से संघ परिवार द्वारा शुरू से लगायी जा रही इसकी उ मीद की ओर था कि, इससे घुसपैठिये यानी मुसलमान बाहर हो जाएंगे। बिहार में तो सर प्रक्रिया के दौरान इसके लिए भाजपा समेत संघ परिवार ने खूब वातावरण भी बनाया था। यह दूसरी बात थी कि आखिरकार, विदेशी के रूप में पहचाने जाने के लिए मतदाता सूची से बाहर होने वालों की सं या इतनी नगण्य निकली कि चुनाव आयोग ने पत्रकारों और विपक्षी पार्टियों के पूछने पर भी यह बताना नहीं गंवारा किया कि बिहार में अंततः काटे गए करीब 45 लाख नामों में से, विदेशी कितने थे?

बहरहाल, आदित्यनाथ ने भाजपा कार्यकर्ताओं की इस गलतफहमी को दूर करते हुए, जोर देकर एलान किया कि जो हटाए जा रहे हैं, उनमें 84 से 90 फीसद तो %%हमारे%% अपने ही वोटर हैं! यानी खतरा भाजपा के अपने वोटों पर था। मुद्दा यह नहीं है कि इन कटने वाले चार करोड़ वोटों में से, प्रचंड बहुमत भाजपा के वोटों का होने के आदित्यनाथ के दावे को कितनी गंभीरता से लिया जाना चाहिए या नहीं? मुद्दा यह भी नहीं है कि भाजपायी मु यमंत्री किस हद तक अपने कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने की ही मंशा से सर की प्रक्रिया पर सवाल उठा रहे थे। मुद्दा यह है कि पहली बार सत्ताधारी पार्टी का एक मु यमंत्री, सर की प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर सवाल उठा रहा था। और इससे भी बढ़कर यह कि मतदाताओं के नामांकन की मूल आखिरी तारीख तक के अनुभव को सामने रखकर, देश के सबसे बड़े राज्य का मु यमंत्री यह कह रहा था कि जिस प्रकार से सर की प्रक्रिया चल रही थी, उसे अगर उसी प्रकार चलते रहने दिया जाता है, तो उत्तर प्रदेश में चौथाई मतदाताओं के नाम कट जाएंगे। समूची सर प्रक्रिया की वैधता पर इससे बड़ा सवालिया निशान कोई नहीं लगा सकता है।

पर आदित्यनाथ इतने पर ही नहीं रुके। उन्होंने नाम कटे जाने ही नहीं, जोड़े जाने की प्रक्रिया की भी साख पर सवाल खड़े कर दिए। उन्होंने सार्वजनिक रूप से इसकी भी शिकायत की कि उनकी जानकारी में आया था कि प्रकटतः आयु समेत अनेक विसंगतियों के बावजूद, बंगलादेशियों के नाम सूची में आ गए हैं। यानी एक चौथाई नाम काटने के बाद भी, इन मतदाता सूचियों में तथाकथित बंगलादेशी या घुसपैठियों के नाम बने ही हुए हैं! याद रहे कि इससे पहले, भाजपा के प. बंगाल के अध्यक्ष ने भी, राज्य में जारी सर प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर तीखे सवाल खड़े किए थे। लेकिन, उनका तर्क यह था कि चूंकि बीएलओ बनाए गए निचले दर्जे के अधिकारी राज्य सरकार द्वारा नियंत्रित होते हैं, इसलिए राज्य में सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस ने अपने पक्ष में पूरी प्रक्रिया को झुका लिया है। लेकिन, आदित्यनाथ तो राज्य सरकार के नाते बीएलओ पर अपने नियंत्रण के बावजूद, थोक में वोट कटने की शिकायत कर रहे थे। जाहिर है कि उनका इशारा इस प्रक्रिया के संरचना में ही समस्या होने की ओर था। इस पूरी कसरत का तो मकसद ही है, बड़े पैमाने पर मतदाताओं की छंटनी करना!

बदकिस्मती से ठीक यही हो रहा है। वर्तमान चक्र में जिन बारह राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में सर की प्रक्रिया चल रही है, उनमें से चार राज्यों में जहां मतदाता नामांकन का चरण पूरा हो चुका है, करीब तीन करोड़ नाम काटने का प्रस्ताव है। इनमें सबसे ज्यादा, 97 लाख नाम तमिलनाडु में ही काटे गए हैं। इसके अलावा गुजरात में 73.7 लाख, प. बंगाल में 58 लाख और राजस्थान में 41.8 लाख नाम काटे गए हैं। बिहार में नामांकन के चक्र में काटे गए 65 लाख नामों को जोड़कर, यह आंकड़ा साढ़े तीन करोड़ से ऊपर पहुंच जाता है। याद रहे कि ये आंकड़े इस चक्र के आधे ही राज्यों के हैं। इसके अलावा, नामांकन के इस चरण में तो नामांकन फार्म मात्र भरने वाले सूची में हैं। इसके बाद, उनके नामों की छंटनी होनी है, जो चुनाव आयोग के पैमाने के हिसाब से 2003 की मतदाता सूची के साथ, अपनी संबद्धता (खुद अपनी या अपने माता-पिता या निकट संबंधी की उपस्थिति) के रूप में साबित नहीं कर पाएंगे और इसलिए, मतदाता सूची में रहने की शर्त के तौर पर अपनी नागरिकता साबित करने के लिए बाध्य किए जाएंगे। इस कठिन परीक्षा में जो सफल नहीं होंगे, उनके नाम दूसरे चक्र में कट जाएंगे। एक अनुमान के अनुसार, वर्तमान चरण में कटने वाले वोटों की सं या 10 करोड़ तक पहुंच सकती है। योगेन्द्र यादव के यह कहने में कोई अतिरंजना नहीं है कि यह दुनिया की सबसे बड़ी वोट कटाई की कसरत है। बेशक, मतदाता सूचियों में सुधार की जरूरत से और सुधार की गुंजाइश से कोई इंकार नहीं कर सकता है। मिसाल के तौर पर अगर मृतकों के नाम मतदाता सूचियों में हैं या एक ही मतदाता एक से ज्यादा स्थानों पर मतदाता बना हुआ है, तो इन त्रुटियों को दूर करना जरूरी है। लेकिन, सर के रूप में जिस तरह से नये सिरे से मतदाता सूचियां बनाने की कसरत शुरू की गयी है और वह भी मनमाने आधार वर्ष लेकर तथा उससे भी ज्यादा मनमानी समय-सूचियां तथा साक्ष्य व पद्धतियां थोपकर, उसने सारी प्रक्रिया को ही पूरी तरह से प्रदूषित कर दिया है। मिसाल के तौर पर तमिलनाडु में जहां 26.9 लाख नाम मृतकों के रूप में और 4 लाख डुप्लीकेट वोटर के रूप में काटे गए हैं, वहीं 66.4 लाख नाम अनुपलब्ध या कहीं चले गए के नाम पर काटे गए हैं। वास्तव में यह श्रेणी सबसे बढ़कर, आम तौर पर अपने राज्यों से बाहर जाने वाले प्रवासी मजदूरों के नाम और दूसरे राज्यों से आकर काम करने वाले प्रवासी मजदूरों के नाम, दोनों को काटे जाने का औजार बन गयी है।

विविध समाचार

एसवाईएल विवाद : सीएम सैनी बोले–यह काफी पुराना मुद्दा, 13 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई से पहले फिर होगी बैठक

चण्डीगढ़ ०५/०१ (संवाददाता): सतलुज–यमुना लिंक नहर (एसवाईएल) विवाद पर मंगलवार को केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल की अध्यक्षता में हुई बैठक में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के बीच सकारात्मक चर्चा हुई। बैठक के बाद सीएम सैनी ने कहा कि यह लंबे समय से चला आ रहा विषय है। इसको लेकर 9 जुलाई को भी बैठक आयोजित हुई थी, जिसमें काफी सकारात्मक चर्चा हुई। आज उससे एक कदम आगे बढ़कर बातचीत हुई है। 13 अगस्त को इस मसले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होनी है। इससे पहले एक बार फिर दोनों मुख्यमंत्री आपस में बैठेंगे और इस मसले पर चर्चा करेंगे। वहीं, भगवंत मान ने कहा कि केंद्र सरकार सिंधु जल संधि को रद्द ही रखे। इसे किसी के दबाव में बहाल मत करे। इतना ही नहीं सिंधु व उसकी सहायक नदियों का पानी भी पंजाब की ओर डायवर्ट कर दिया जाए, क्योंकि पंजाब ही इस पानी को रोक सकता है। यदि ऐसा होता है तो पंजाब न केवल हरियाणा बल्कि राजस्थान को भी जल दे सकता है। दोनों मुख्यमंत्रियों ने पत्रकारों से कहा कि वे इस मसले पर बहुत ही सकारात्मक वातावरण के साथ सुप्रीम कोर्ट में जाएंगे और जल्द इस मसले का हल भी निकालेंगे। इस बैठक में केंद्रीय सचिव देबाश्री मुखर्जी, मुख्यमंत्री सैनी के मुख्य प्रधान सचिव राजेश खुल्लर, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनुराग अग्रवाल सहित सिंचाई विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे। सीएम मान ने सिंधु जल संधि को लेकर मजाकिया अंदाज में केंद्र सरकार पर तंज भी कसा। कहा–सिंधु जल संधि पर यदि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कोई पोस्ट कर दखल न दें तो पंजाब हरियाणा समेत अन्य राज्यों को भी जल देने की स्थिति में आ सकता है। हालांकि सीएम सैनी ने सिंधु जल संधि को दूसरा विषय बताया। मान ने वाईएसएल की थ्योरी पर भी चुटकी ली। उन्होंने कहा कि पंजाब में मौजूदा जल संसाधनों के हालात यदि देखें तो एसवाईएल को छोड़कर अब वाईएसएल (यमुना–सतलुज लिंक नहर) की थ्योरी पर बढ़ना होगा। पंजाब आज सतलुज नहर के जरिये हरियाणा को पानी देने की स्थिति में नहीं है। यमुना का उफान यूपी को डुबोता है, उसके पानी को पंजाब की ओर डायवर्ट करना होगा। इसमें ग्रेविटी भी कोई बाधा नहीं बनेगी और पंजाब सभी पड़ोसी राज्यों को पानी भी दे सकेगा। मुख्यमंत्री मान ने कहा कि सिंधु जल संधि यदि रद्द रहती है तो सहायक नदियों का पानी पंजाब में ही रोका जा सकता है। इसके लिए पंजाब ही फर्स्ट चौनल है, क्योंकि हमारे पास पर्याप्त बांध हैं। इस पानी को पंजाब की ओर डायवर्ट कर भाखड़ा, पौंग, रणजीत सागर और शाहपुर कंडी डैम के जरिये रोका जा सकता है। उसके बाद विभिन्न चौनलों के माध्यम से इसे अन्य प्रदेशों में भेजा जा सकता है। इससे 24 एमएएफ (मिलियन एकड़ फुट) पानी मिल जाएगा जबकि झगड़ा सिर्फ 2–3 एमएएफ का है। मान ने कहा कि आज पहाड़ों पर बादल फट रहे हैं, अत्यधिक पानी से तबाही मच रही है, लिहाजा पानी को संभालने व संचय की जरूरत है। जब पहाड़ों से ज्यादा पानी आता है तो कहा जाता है कि ये पानी पंजाब संभाले और जब कमी होती है, तो कहा जाता है कि पंजाब पानी नहीं दे रहा। ऐसा अब नहीं चल सकता। मान ने कहा कि हमें तो यह विवाद विरासत में मिला है, इस पर आज तक राजनीति ही होती आई है। अब उम्मीद है मसला हल हो जाएगा।

फिलहाल बिक्रम मजीठिया को राहत नहीं, न बैरक बदली न जमानत मिली

चंडीगढ़ ०५/०१ (संवाददता): वरिष्ठ शिअद नेता एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री बिक्रम सिंह मजीठिया को फिलहाल राहत मिलती नहीं दिख रही है। उनकी जमानत और जेल में बैरक बदलने की याचिकाओं पर आज मोहाली अदालत में सुनवाई तो हुई, लेकिन कोई फैसला नहीं हो सका। इसके साथ ही अदालत ने मजीठिया की बैरक स्थानांतरण अर्जी, जो आज के लिए सूचीबद्ध थी, 12 अगस्त तक स्थगित कर दी है। गत शनिवार को मजीठिया की नाभा जेल से वीडियो कांफ्रेंसिंग से पेशी हुई थी। उनकी पिछली 14 दिन की हिरासत की अवधि पूरी हो चुकी थी। इसके बाद अदालत ने सुनवाई कर उन्हें आगे की न्यायिक हिरासत में भेजने के आदेश दिए।

दिग्विजय चौटाला को पुलिस ने हिरासत में लिया, कहा– भुगतना पड़ेगा खामियाजा

भिवानी ०५/०१ (संवाददाता): बंसीलाल यूनिवर्सिटी में जननायक जनता पार्टी के छात्र संगठन इंडियन नेशनल स्टूडेंट ऑर्गेनाइजेशन यानी इनसो का 31वां स्थापना दिवस मनाने पहुंचे जननायक जनता पार्टी के युवा प्रदेश अध्यक्ष दिग्विजय चौटाला को पुलिस ने हिरासत में लिया है। जानकारी के अनुसार दिग्विजय चौटाला के नेतृत्व में कार्यकर्ता ओल्ड कैंपस के गेट पर पहुंचे तो यूनिवर्सिटी और पुलिस प्रशासन ने उन्हें रोक दिया। प्रशासन की तरफ से कहा गया कि कार्यक्रम को लेकर मंजूरी नहीं ली गई। इसके बाद भी दिग्विजय चौटाला और कार्यकर्ता अंदर जाने की जिद पर अड़ गए। जिसके बाद काफी देर तक गेट पर दोनों पक्षों में कहासुनी हुई। फिर पुलिस ने दिग्विजय चौटाला व अन्य को हिरासत में ले लिया। पुलिस उन्हें बस में डालकर अपने साथ ले गई। कुछ देर बाद सभी को छोड़ दिया गया। हिरासत में लिए जाने से पहले दिग्विजय चौटाला ने कहा– प्रजातांत्रिक प्रणाली में सरकार हक छीनने का प्रयास कर रही है। हम इसकी ईंट से ईंट बजाने का काम करेंगे। सरकार ने छात्र हितों और सामाजिक सरोकारों से जुड़े दिवस को मनाने के साथ जो कुठाराघात किया, उसका खामियाजा सैनी सरकार को भुगतना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि आज पौधारोपण का कार्यक्रम व शहीदों के सम्मान में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर व चौधरी देवीलाल की विचारधारा स्टूडेंट के प्रति थी। उसको लेकर एक कार्यक्रम रखा था, जिसकी अनुमति स्वयं वीसी ने मुझे दी थी, लेकिन जब बच्चे अनुमति लेने गए तो उन्हें नकार दिया। ये यूनिवर्सिटी को पूर्ण रूप से आरएसएस का अड्डा बनाकर रखना चाहते हैं।

दर्दनाक हादसा : शिमला के रोहड़ू में पब्बर नदी में गिरी कार, 3 युवकों की मौत, एक घायल

शिमला ०५/०१ (संवाददाता): शिमला जिले के रोहड़ू उपमंडल में बीती रात एक दर्दनाक सड़क हादसे में तीन युवकों की मौत हो गई, जबकि एक युवक घायल हो गया। यह हादसा उस समय हुआ जब चारों युवक एक कार में सवार होकर लोकल लैला मेले से लौट रहे थे। कार अनियंत्रित होकर पब्बर नदी में जा गिरी। हादसे में विशाल ठाकुर (गांव मुंचहरा), अभय खंडियान (ग्राम डाकगांव), और हिमांशु (ग्राम मुंचहरा) की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि हर्ष चौहान (ग्राम डोगरी मुंचहारा) कार से छिटककर बाहर गिर गया और उसे हल्की चोटें आई हैं। पुलिस के अनुसार हादसा रात लगभग 12 बजे के आसपास हुआ, लेकिन पुलिस को इसकी जानकारी रात 3 बजे के करीब मिली। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और रेस्क्यू अभियान चलाया गया। तीनों मृतकों के शव नदी से निकालकर रोहड़ू अस्पताल भेजे गए हैं, जहां पोस्टमॉर्टम के बाद उन्हें परिजनों को सौंपा जाएगा। एसएचओ रोहड़ू प्रवीण राणा ने बताया कि हादसे के कारणों का अभी तक पता नहीं चल सका है। प्रारंभिक जांच में लापरवाही से ड्राइविंग या सड़क पर अंधेरा कारण हो सकता है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हादसे के शिकार चारों युवक चिड़गांव क्षेत्र के रहने वाले बताए जा रहे हैं।

एक पौराणिक पात्र ज्ञान और शिक्षा के देवता हयग्रीव

भारत की समृद्ध, गौरवमयी पौराणिक परंपरा में समाहित अनेक अद्भुत व प्रेरणादायक कथाएं, प्रसंग और उनसे सम्बन्धित पौराणिक पात्र अक्सर ही विवाद के केन्द्रविन्दु बनते रहे हैं। ऐसे ही एक पौराणिक पात्र हैं– हयग्रीव, जो हयग्रीव नाम होने से अक्सर ही विद्वानों के मध्य कौतुहल के विषय बने रहे हैं।इसका कारण यह है कि पौराणिक ग्रंथों में हयग्रीव नाम दो रूपों –विष्णु और एक दानव रूप में आया है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक भगवान हयग्रीव हैं, जो अश्व के सिर व मानव के शरीर रूप में अवतरित हुए थे।इसके साथ ही हयग्रीव नामक एक दानव अर्थात दैत्य के होने की कथाएं भी इन ग्रंथों में अंकित हैं, जिसका सिर भी घोड़े का और शरीर मनुष्य का था। और जिसे विष्णु के अवतार हयग्रीव ने वध किया था।इस सम्बन्ध में विभिन्न पुराणों में पृथक–पृथक कथाएं अंकित हैं, जो इस विषय को और भी जटिल व कौतुहलक्रमशः बनाती व जगाती हैं। इसी कारण पौराणिक पात्र हयग्रीव के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्ति, शंका व विसंगतिपूर्ण कथाएं लोगों में भ्रम का कारण बनी हुई हैं।

पौराणिक पात्र हयग्रीव का नाम हय अर्थात अश्व,घोड़ा और ग्रीव अर्थात गर्दन से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है– अश्व की ग्रीवा वाला अर्थात घोड़े की गर्दन वाला। हयग्रीव के बारे में महाभारत, रामायण, विष्णु पुराण, देवी भागवत पुराण आदि विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है।एक प्रचलित कथा के अनुसार हयग्रीव नामक एक असुर (दैत्य) असुरों का राजा था।वह अत्यंत शक्तिशाली और विद्वान था।दैत्य हयग्रीव ने कठिन तपस्या के बल पर भगवान ब्रह्मा से अमरता और अपराजेयता का वरदान प्राप्त किया था। अपनी अधर्मी प्रवृति और ब्रह्मा से प्राप्त वरदान के मद में उसने चारों वेदों की चोरी जैसे अनेक अनैतिक कर्म करने शुरू कर दिए।संसार में अज्ञानता व अराजकता फैलाने,वेदों के बिनाज्ञान व धर्म का पालन करना असंभव बनाने और अज्ञानता, अधर्म व अनैतिकता का वर्चस्व बढाने के उद्देश्य से असुर राज हयग्रीव ने संपूर्ण ब्रह्मांड के ज्ञान और धर्म का स्रोत माने जाने वाले ब्रह्मा द्वारा सृजित वेदों को चुराकर समुद्र के तल में छिपा दिया, जिससे संसार में अंधकार और अज्ञानता फैलने लगी। देवताओं और मनुष्यों के लिए वेदों के बिना धर्म का पालन करना कठिन हो गया, और संसार में पाप और अधर्म का बोलबालाबढ़ने लगा। इस संकट की स्थिति से चिंतितदेवताओं ने भगवान विष्णु से सहायता की प्रार्थना की।सृष्टि के पालनकर्ता और धर्म की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले विष्णुने इस संकट का समाधान करने का निर्णय लिया। उन्होंने हयग्रीव अवतार धारण किया, जिसमें उनका सिर घोड़े का और शरीर मानव का था। इस अनोखे रूप ने उन्हें हयग्रीव के समान बलशाली और शक्तिशाली बना दिया। और उन्होंने समुद्र तल तक की यात्रा कर असुर हयग्रीव का वध कर दिया और वेदों को ब्रह्मा को वापस कर दिया। कतिपय फेरबदल के साथ इसी से मिलती–जुलतीकई कथाएं, प्रसंग व वर्णन हयग्रीव के सम्बन्ध में विभिन्न पुराणों में अंकित है। भागवत पुराण में अंकित हयग्रीव से सम्बन्धित एक कथा के अनुसार हयग्रीव की कथा का प्रथम वर्णन मत्स्यावतार से संबंधित है।

कथानुसार हयग्रीव नामक एक असुर के द्वारा निद्रामग्न ब्रह्मा से वेदों को चुरा कर सागर की गहराईयों में जाकर छुप जाने के कारण वेदों के लोप हो जाने से समस्त संसार में अज्ञानता व्याप्त हो गई।तब ब्रह्मा ने भगवान विष्णु से वेदों के कल्याण का अनुरोध किया। उस समय तक सतयुग और त्रेतायुग के मध्य अर्थात संधिकाल में हुई प्रलय काल भी समीप आ चुका था। यह देखकर भगवान विष्णु ने अपना प्रथम मत्स्य अवतार लिया और स्वयंभू मनु एवं सप्तर्षियों की रक्षा करने के साथ ही जल में छिपे हयग्रीव का भी वध कर दिया और वेदों को पुनः प्राप्त कर परमपिता ब्रह्मा को लौटा दिया। हयग्रीव से सम्बन्धित एक कथा देवी सप्तशती में वर्णित भगवती श्रीदुर्गा से लड़ने वाले दो असुरों –मधु व कैटभ के समय की है। इस कथा के अनुसार विष्णु के कान के मैल से मधु और कैटभ नामक दो असुरों की उत्पति हुई।संपूर्ण ब्रह्मांड के ज्ञान का स्रोत माने जाने वाले वेदों के सृजनकर्ता ब्रह्मा जप, तप व ध्यान में लीन रहा करते थे।एक दिन ब्रह्मा के वेदों को प्रकट करते समय उस स्मृति को उन दोनों असुरों ने सुन लिया और उसे लेकर पाताल में छिप गए। तब भगवान विष्णु ने घोड़े के सिर और मनुष्य के धड़ वाला एक अद्भुत अवतार लिया, जो हयग्रीव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस हयग्रीव रुपी विष्णु ने मधु और कैटभ से युद्ध किया और उन दोनों का वध कर दिया। उन दोनों का वध करने के लिए भगवान शिव ने उन्हें सुदर्शन चक्र प्रदान किया और नारायण ने उसी सुदर्शन चक्र से दोनों असुरों के छः–छः टुकड़े कर दिए। दो सर, दो धड़, चार हाथ और चार पैर। उनके वही टुकड़े पृथ्वी पर गिरे, जिससे पृथ्वी की बारह परतों का निर्माण हुआ। उनके टुकड़े अर्थात मेद गिरने से पृथ्वी मेदिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई। बाद में हयग्रीव रुपी विष्णु ने वेदों को ब्रह्मा को लौटा दिया। हयग्रीव के सन्दर्भ में एक कथा महाभारत में भी अंकित है। महाभारत में अंकित इस अत्यंत प्रचलित व प्रसिद्ध कथा के अनुसार महर्षि कश्यप और उनकी पत्नी दक्ष पुत्रीदनु से दानवों की उत्पत्ति हुई। उनमें से एक अश्व के सिर वाला दानव था, जिसका नाम था हयग्रीव। उसने अपनी तपस्या से माता पार्वती को प्रसन्न कर अमरता प्राप्त करने का वरदान मांगा, लेकिन पार्वती ने वह वरदान देने से स्पष्ट मना कर दिया। इस पर उसने वरदान मांगा कि उसकी मृत्यु हयग्रीव के ही हाथों हो। माता ने तथास्तु कह यह वरदान दे दिया। वरदान पाकर हयग्रीव ने सोचा कि मैं तो अब अमर हो गया हूँ। क्योंकि मेरी मृत्यु केवल मेरे ही हाथों से हो सकती है।संसार में अन्य कोई हयग्रीव तो है ही नहीं।अपनी अमरता की बात सोचकर उसने दंभवश सम्पूर्ण सृष्टि में त्राहि–त्राहि मचा दी। तब ब्रह्मा ने विष्णु से इसका कोई उपाय करने को कहा।भगवान विष्णु लीलावश एक दिन माता लक्ष्मी की सुंदरता को देख कर मुस्कुराने लगे। माता उनकी लीला समझ नहीं पाई और उन्होंने सोचा कि स्वामी उनका परिहास कर रहे हैं। तब उन्होंने विष्णु को श्राप दे दिया कि उनका मस्तक धड़ से अलग हो जाए।श्राप देने के बाद माता लक्ष्मी अपनी गलती पर विलाप करने लगीं। तब विष्णु ने उन्हें समझाया कि सृष्टि के कल्याण के लिए उनका यहश्राप वरदान बन जायेगा। हयग्रीव दानव ने अहंकार में आकर सीधे विष्णु को ललकारा। विष्णु की तो यह इच्छा ही थी।वे तत्काल उससे युद्ध करने पहुंचे। दोनों में घोर युद्ध आरंभ हुआ, किन्तु माता पार्वती के वरदान के कारण विष्णु उसका वध नहीं कर रहे थे। इस प्रकार युद्ध करते करते सात दिन बीत गए।आठवें दिन दोनों युद्ध विराम लेकर विश्राम करने लगे। हयग्रीव भूमि पर और विष्णु अपने धनुष सारंग (सांगड़) की प्रत्यंचा पर विश्राम करने लगे। विष्णु के योगनिद्रा में चले जाने पर देवताओं को यह चिंता जगी कि ऐसे मेंअसुर हयग्रीव का वध कौन करेगा? ऐसा सोचकर देवताओं ने निर्णय लिया कि विष्णु के धनुष सारंग की प्रत्यंचा खींची जाए जिसके स्वर से विष्णु की निद्रा भंग हो जाएगी। लेकिन किसी में भी विष्णु के धनुष सारंग के प्रत्यंचा को खींचने की सार्मथ्य नहीं थी।उह देख देवताओं ने ब्रह्मा से प्रार्थना की।देवताओं की प्रार्थना सुनकर ब्रह्मा ने अपने तेज से एक कीड़े को जन्म दिया और उसे सारंग की प्रत्यंचा काटने को कहा। विधाता के तेज से उत्पन्न उस कीड़े ने सारंग की प्रत्यंचा काट दी, जिससे एक कर्णभेदी स्वर उत्पन्न हुआ और उसी प्रत्यंचा से विष्णु की गर्दन कट गई। इस प्रकार माता लक्ष्मी का श्राप फलीभूत हुआ। यह देखकर देवता शोक में डूब गए कि अब हयग्रीव का वध कौन करेगा?तब वहां माता पार्वती प्रकट हुई और सबको दानव हयग्रीव को दिए गए अपने वरदान के सम्बन्ध में बताया। उन्होंने ब्रह्मा से प्रार्थना की कि नारायण के धड़ में अश्व का मुख लगा कर उन्हें हयग्रीव रूप दिया जाए, जिससे वे असुर हयग्रीव का वध कर सकें। तब ब्रह्मा ने अश्व के मुख वाले देवों के वैद्य अश्विनीकुमारों को बुलाया जो स्वयं अश्व समान मुख होने से हयग्रीव के रूप में प्रसिद्ध थे।अश्विनीकुमार द्वय ने ब्रह्मा के आदेश पर एक नील अश्व का मुख विष्णु के धड़ पर लगा दिया। इस प्रकारविष्णु ने हयग्रीव अवतार लिया। और माता पार्वती के वरदान के अनुसार उसका अनुपालन करते हुए तत्काल ही हयग्रीव दानव का वध कर दिया और सृष्टि को उसके अत्याचार से मुक्त करवाया। एक अन्य कथा के अनुसार कश्यप और दनु का पुत्र दानव हयग्रीव दानवों का पहला शासक बना। जब ईश्वर ने वेदों की रचना की और उन्हें ब्रह्मा को दिया, तब शिव ने यह निर्णय लिया कि वे मनु और उनकी पत्नी शतरूपा को छोड़कर शेष समस्त मानवता का संहार कर देंगे, क्योंकि शेष मानवता वेदों को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक भ्रष्ट थी और वेदज्ञान से दूर होने लगी थी।जब हयग्रीव को यह ज्ञात हुआ कि मनुष्य वेदज्ञान के अनुपालन से दानवों से श्रेष्ठ हो जाएंगे,तो उसने मानवों को वेद ज्ञान प्राप्त करने से रोकने का निश्चय किया। एक दिन वह ब्रह्मा की अनुपस्थिति में सतयलोक पहुंचाऔर वहां उसने घोड़े का रूप धारण कर लिया, ताकि वेदों, जो उस समय चार बालकों के रूप में थे, का ध्यान अपनी ओरआकर्षित कर सके। उसने बालक रुपी वेदों से पूछा कि ब्रह्मा ने मानवों तक पहुंचाने के स्थान पर उन्हें अपने लोक में क्यों ले आए?जब वेदों ने अपनी कथा सुनाई, तो हयग्रीव हंस पड़ा और उन्हें ब्रह्मा की मंशा के बारे में धोखे में डालते हुए कहा कि ब्रह्मा उन्हें स्वयं के लिए रखना चाहते हैं। इसके बादराक्षस हयग्रीव ने वेदों को कैद कर लिया।

यह स्थिति देखविष्णु ने मत्स्य अवतार धारण कर मनु को यह निर्देश दिया कि वह उस महाप्रलय से कैसे बचें, जिसे शीघ्र ही समस्त अधर्म का नाश करने के लिए शिव भेजने वाले थे? इसके पश्चातविष्णु ने मत्स्य रूप में हयग्रीव का वध किया और वेदों को मुक्त कर दिया, ताकि प्रलय के पश्चात वे उन्हें मनु को प्रदान कर सकें। विष्णु अवतार भगवान हयग्रीव की उत्पति अर्थात अवतरण श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को होने की मान्यता होने के कारण इस दिन इनकी पूजा– अर्चना करने की पौराणिक परिपाटी है।हयग्रीव की पूजा ज्ञान और शिक्षा के देवता के रूप में भी विद्वानों और विद्यार्थियों के द्वारा विशेष रूप से की जाती है।

– अशोक "प्रवृद्ध"

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार

राउरकेला, मंगलवार 06 जनवरी 2026

महिला बीडीओ पर बीजेपी नेता ने ऑफिस में किया हमला

राजनगर ०५/०१ (संवाददाता): केंद्रपाड़ा जिले के राजनगर ज़्लॉक हेडक्वार्टर में एक महिला ओएएस ऑफिसर पर उनके ऑफिस चैंबर में एक लोकल भाजपा नेता ने कथित तौर पर हमला किया, जिसके बाद विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। हालांकि पूरी घटना ऑफिस चैंबर में लगे CCTV में कैद हो गई है, लेकिन ज़्लॉक ऑफिस में रोज़ाना का काम रुक गया ज़्योंकि स्टाफ ने महिला ऑफिसर पर हमले का विरोध जताने के लिए काम बंद कर दिया। क्क्छ्ष्ठ कार्यकर्ताओं ने शहर में एंट्री रोड को ज़्लॉक कर दिया, जिससे शहर में गाड़ियों का ट्रैफिक रुक गया। यह घटना शुक्रवार दोपहर को हुई। भाजपा नेता ललित कुमार बेहरा, जो पिछले विधानसभा चुनाव में हार गए थे, अपने समर्थकों के साथ कथित तौर पर राजनगर BDO तिलोज़्मा

फ्रुस्ती के चैंबर में घुस गए और उन्हें ऑफिस का कुछ काम जल्दी करने के लिए धमकाया। बाद में, उन्होंने कथित तौर पर उन पर हमला करने की कोशिश की। हालांकि, बेहरा को उनके समर्थकों ने ड्यूटी पर मौजूद महिला ऑफिसर पर मारपीट करने से रोक दिया। अभी तक कोई स्न्ढ्ढक्र दर्ज नहीं हुई है, जबकि एडमिनिस्ट्रेटिव जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

केंद्रपाड़ा के कलेज़्टर रघुराम आर अय्यर ने कहा, राजनगर BDO ने मुझे लिखकर शिकायत करके घटना की जानकारी दी है। सब-कलेज़्टर इसकी जांच कर रहे हैं। शिकायत करने वाली ऑफिसर फ्रुस्ती ने आरोप लगाया है कि क्क्छ्क्क नेता ने ड्यूटी के दौरान उन पर हमला करने की कोशिश की। ष्टष्टञ्जङ्क फुटेज की जांच की जा रही है। एक ऑफिसर पर हमले की ऐसी कोशिश दुर्भाग्यपूर्ण है।

अय्यर ने आगे कहा, एडमिनिस्ट्रेशन ने इसे गंभीरता से लिया है और ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कदम उठाएगा। BJD और कांग्रेस दोनों ने इस घटना की निंदा की है। ह्लक्क्ष्ट प्रेसिडेंट भक्त चरण दास ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, ्रक्क्छ्क्क नेता ललित बेहरा और उनके समर्थकों द्वारा राजनगर ज़्लॉक ऑफिस में एक महिला क्ष्ठह्ल पर हमला, क्क्छ्क्क की डराने-धमकाने की पॉलिटिज़्स को सामने लाता है। हालांकि वह इस घटना में बाल-बाल बच गईं, लेकिन ष्टष्टञ्जङ्क में यह घटना कैद हो गई, जो क्क्छ्क्क के घमंड और गुंडागर्दी के कल्चर को दिखाता है। मैं इस घटना की कड़ी निंदा करता हूं और आरोपियों के खिलाफ सज़्त कार्रवाई की मांग करता हूं। ओडिशा महिलाओं को धमकाना या सरकारी अधिकारियों को डराने-धमकाने के लिए पावर का गलत इस्तेमाल बर्दाश्त नहीं करेगा। क्क्छ्ष्ठ प्रवक्ता लेनिन मोहंती ने कहा, हम क्क्छ्क्क नेता ललित बेहरा की लीडरशिप में 30 गुंडों की भीड़ द्वारा राजनगर की महिला क्ष्ठह्ल पर किए गए बर्बर हमले की कड़ी निंदा करते हैं।

आरएसपी में विश्व ध्यान दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित

राउरकेला ०५/०१ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) के ज्ञानार्जन एवं विकास (एल एंड डी) विभाग स्थित गोपबंधु सभागार में विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मंच में कार्यपालक निदेशक (खान विकास-सीएमएलओ), श्री बी के गिरी, कार्यपालक निदेशक (खान, ओडिशा खान समूह-सीएमएलओ), श्री एम पी सिंह, तथा मुज़्य वक्ता के रूप में 'आर्ट ऑफ लिविंग' के वरिष्ठ संकाय श्री बी डी शिवहरे उपस्थित थे।

सभी को संबोधित करते हुए श्री गिरी ने मानसिक संतुलन, भावनात्मक स्थिरता तथा समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए ध्यान-मनन की भूमिका पर जोर दिया, जो आंतरिक कल्याण प्राप्त करने में विशेषकर आज के तेज़-तर्रार पेशेवर परिवेश में अत्यंत आवश्यक है ।

श्री सिंह ने अपने संबोधन में इस बात पर प्रकाश डाला कि, शांत मन और एकाग्रचित कार्यस्थल पर बेहतर उत्पादकता, बेहतर निर्णय लेने और सौहार्दपूर्ण पारस्परिक संबंधों में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

श्री शिवहरे ने ध्यान और सजगता के व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए तनाव प्रबंधन में नियमित अज़्यास की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और यह बतलाने की कोशिश की कि कैसे यह एकाग्रता को बढ़ाता है और समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को सरल ध्यान तकनीकों और श्वसन व्यायामों का मार्गदर्शन भी दिया। 'आर्ट ऑफ लिविंग' के स्वेच्छाकर्मियों की एक टीम ने ध्यान की सरल प्रक्रियाओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को तकनीकों को समझने में मदद की ।

कार्यक्रम के आरंभ में मुज़्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन-एल एंड डी), श्री पी के साहू ने सभा का स्वागत किया। वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन-एल एंड डी), श्री एल मरांडी द्वारा कार्यक्रम का समन्वय किया गया।

12 जनवरी को सभी शिक्षण संस्थानों में वंदे मातरम गाया जाएगा

भुवनेश्वर ०५/०१ (संवाददाता): एक ऑफिशियल बयान के मुताबिक, ओडिशा के सभी एजुकेशनल इंस्टिट्यूशन 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जयंती और नेशनल यूथ डे के मौके पर पूरे राज्य में वंदे मातरम गाने का प्रोग्राम मनाएंगे। इस मौके पर, स्टूडेंट्स 'आत्मनिर्भर भारत स्वदेशी संकल्प' भी बोलेंगे और हर इंस्टिट्यूशन एक स्टूडेंट को 'आत्मनिर्भर भारत एंबेसडर' के तौर पर नॉमिनेट भी करेगा। स्टूडेंट्स के लिए कई तरह के कॉज़्पिटिशन ऑर्गनाइज़ किए जाएंगे और अच्छे पार्टिसिपेंट्स को सज़्मानित किया जाएगा। ओडिया लैंग्वेज, लिटरेचर और

कल्चर डिपार्टमेंट की तरफ से जारी एक बयान के मुताबिक, राज्य भर के यूथ ज़्लब भी इस ग्रुप में हिस्सा लेंगे। डिपार्टमेंट ने सभी डिस्ट्रिज़्ट कलेज़्टर से प्रोग्राम को आसानी से लागू करने के लिए कहा है।

गायन को आसान बनाने के लिए, पूरे राज्य में वंदे मातरम ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑर्गनाइज़ किया जा रहा है। ज़ोनल लेवल के ट्रेनिंग प्रोग्राम करने के लिए राज्य को पांच ज़ोन—जयपुर, बरहामपुर, बालासोर, संबलपुर और भुवनेश्वर—में बांटा गया है। दिसंबर में बरहमपुर, बालासोर और जयपुर में जोनल ट्रेनिंग प्रोग्राम हुए, जबकि संबलपुर जोनल ट्रेनिंग 2 जनवरी को पूरी हुई। एक अधिकारी ने बताया कि भुवनेश्वर जोनल ट्रेनिंग शनिवार को खत्म हुई।

शनिवार को उत्कल यूनिवर्सिटी में हुए भुवनेश्वर जोनल-लेवल ट्रेनिंग प्रोग्राम को संबोधित करते हुए, कल्चर मिनिस्टर सूर्यबंशी सूरज ने कहा कि वंदे मातरम भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की आवाज़ बन गया और आज भी राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना को प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि यह गीत नागरिकों में हिज़्मत और ताकत भरता है।

संबलपुर में कार और ट्रक की टक्कर में 3 की मौत

संबलपुर ०५/०१ (संवाददाता): धनुपाली पुलिस स्टेशन के तहत नज़्सापाली के पास नेशनल हाईवे 55 पर एक तेज़ रज़्तार कार और खड़े ट्रक के बीच टक्कर हो गई, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई। मरने वालों की पहचान अभी कन्फर्म नहीं हुई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, राख से भरा ट्रक हाईवे के किनारे खड़ा था, तभी शाम करीब 4 बजे संबलपुर शहर से मानेस्वर की ओर तेज़ रज़्तार से जा रही कार का कंट्रोल बिगड़ गया और वह उसमें जा घुसी।टक्कर से कार कुचल गई, जिससे उसमें बैठे लोग अंदर फंस गए। आस-पास के लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को खबर दी। उनकी मदद से पुलिस ने पीड़ितों को बचाया। मौके पर दो शव बरामद किए गए और पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिए गए, जबकि गंभीर रूप से घायल तीसरे व्यक्ति को बुर्ला में वीर सुरेंद्र साईं इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च (ङ्कढ्ढरूस्ड्डक्र) ले जाया गया। घायल व्यक्ति को पहुंचने पर मृत घोषित कर दिया गया। हादसे की सही वजह का पता लगाने के लिए जांच चल रही है।

सरकार चिल्का झील की सुरक्षा के लिए नई योजना बनाएगी-कानून मंत्री पृथ्वीराज

भुवनेश्वर= कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने शनिवार को कहा कि राज्य सरकार चिल्का झील की बायो डायवर्सिटी की सुरक्षा और इसके आसपास के इलाकों के विकास के लिए एक नया एज़्शन प्लान तैयार कर रही है। मंत्री, जो चिल्का विधानसभा क्षेत्र से विधायक भी हैं, ने मीडियाकर्मियों को बताया कि लैगून को नया रूप देने के लिए 1,500 करोड़ रुपये से 2,000 करोड़ रुपये की योजना वाली एक डिटेल्ड प्रोजेज़्ट रिपोर्ट तैयार की जा रही है।मंत्री ने कहा कि झील का आउटलेट ज़्लॉक हो गया है, जिससे समुद्र में पानी का सही ज़्लो नहीं हो पा रहा है। चूंकि समुद्र का पानी भी झील में नहीं जा पा रहा है, इसलिए इसका इकोलॉजिकल बैलेंस बिगड़ रहा है। इससे अलग-अलग मछलियों और दूसरी जलीय जीवों की आबादी में काफी कमी आई है, उन्होंने

कहा। मंत्री ने कहा कि तुरंत उठाए जाने वाले कदमों में डिटेल्ड साइंटिफिक डेटा इकट्ठा करना और एक ष्ठक्क्रतैयार करना शामिल है। वन और पर्यावरण विभाग के अधिकारी, चिल्का डेवलपमेंट अथॉरिटी और ढ्ढढ्ढञ्ज-चेन्नई इन कोशिशों में सहयोग करेंगे।चिल्का झील के मुज़्य मुद्दों पर चर्चा करने के लिए वन विभाग, ष्टष्ठ और ढ्ढढ्ढञ्ज-चेन्नई के सीनियर प्रतिनिधियों के बीच एक अलग मीटिंग भी हुई। इनमें झील के आउटलेट पर रुकावट को हटाना, इसकी क्षारीयता को बनाए रखना, पानी रखने की क्षमता बढ़ाने के लिए गाद निकालना, बायोडायवर्सिटी की सुरक्षा करना, आसपास के इलाके के विकास को बढ़ावा देना और अपनी आजीविका के लिए झील पर निर्भर स्थानीय समुदायों के हितों की रक्षा करना शामिल है। हरिचंदन ने कहा कि मुज़्यमंत्री मोहन चरण माझी को मीटिंग के नतीजों के बारे में बताया जाएगा। इसके अलावा, इस संबंध में सरकार के एज़्शन प्लान के बारे में केंद्र को भी जानकारी दी जाएगी, उन्होंने कहा।

बस और पिकअप वैन की आमन-सामने की टक्कर में 10 लोग घायल

गंजम ०५/०१ (संवाददाता): गंजाम ज़िले के दिगापहांडी पुलिस स्टेशन के तहत झटीपिटिया में एक सड़क हादसे में दस से ज़्यादा लोग घायल हो गए। रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह हादसा तब हुआ जब 20 से ज़्यादा यात्रियों को ले जा रही एक पैसेंजर मिनी बस सूखी मछली से लदे एक पिकअप वैन से आमने-सामने टकरा गई।

इस हादसे में 15 से ज़्यादा लोग घायल हो गए, जबकि दो से तीन पीड़ितों की हालत गंभीर बताई जा रही है। शुरुआती जांच से पता चलता है कि तेज़ रज़्तार और लापरवाही से गाड़ी चलाना ही इस हादसे की मुज़्य वजह हो सकती है। टक्कर इतनी ज़ोरदार थी कि दोनों गाड़ियों के आगे के हिस्से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए और पिकअप वैन मौके पर ही पलट गई।

टक्कर के बाद, स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस और फायर सर्विस डिपार्टमेंट को सूचना दी। दिगापहांडी पुलिस और बचाव दल ने तुरंत कार्रवाई की और बचाव अभियान चलाया। दोनों ड्राइवरों को गंभीर चोटें आई हैं और उन्हें बेहरामपुर मेडिकल में भर्ती कराया जाएगा। सभी घायल लोगों का दिगापहांडी अस्पताल में इलाज चल रहा है, और गंभीर रूप से घायलों को बेहतर इलाज के लिए एमकेसीजी (बेरहामपुर) मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में शिज़्ट किया गया है। अब तक किसी की मौत की खबर नहीं है, हालांकि टक्कर के बाद यात्री दहशत में थे। पुलिस घटना के सही क्रम का पता लगाने के लिए घटनास्थल की जांच कर रही है। हादसे के बारे में और जानकारी का इंतज़ार है।

ओडिशा विधानसभा की स्थायी समिति के सदस्यों का आरएसपी दौरा

राउरकेला ०५/०१ (संवाददाता): ओडिशा विधानसभा की स्थायी समिति के पाँच सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल ने अपने स्थल निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत सेल, राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) का दौरा किया। आरएसपी का दौरा करने वाले माननीय विधायकों में श्री विभूति भूषण प्रधान, श्री प्रशांत बेहरा, श्री रूपेश कुमार पाणिग्रही, डॉ. फ़कीर मोहन नायक तथा श्री उमा चरण मलिक शामिल थे। इस अवसर पर रघुनाथपाली के माननीय विधायक श्री दुर्गा चरण तांती, निदेशक प्रभारी, आरएसपी, श्री आलोक वर्मा, जिलाधिकारी एवं कलेज़्टर (सुंदरगढ़), डॉ. शुभंकर महापात्र, अपर जिलाधिकारी (राउरकेला), सुश्री धीना दस्तगीर, पुलिस अधीक्षक (राउरकेला), श्री नितेश वधवानी, उप-कलेज़्टर (पानपोष), श्री विजय कुमार नायक, आरएसपी के कार्यपालक निदेशक (संकार्य), श्री बिस्वरंजन पलई, सहित जिला प्रशासन एवं आरएसपी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी संयंत्र दौरे के दौरान माननीय अतिथियों के साथ उपस्थित रहे।प्रतिनिधिमंडल ने आरएसपी के मॉडल कक्ष का भ्रमण किया, जहाँ उन्हें संयंत्र की उत्पादन इकाइयों, विस्तार योजनाओं, तकनीकी प्रगति तथा क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में आरएसपी के योगदान की जानकारी दी गई। इसके पश्चात समिति के सदस्यों ने आरएसपी की प्रमुख रोलिंग मिलों में से एक अत्याधुनिक हॉट स्ट्रिप मिल-2 का भी दौरा किया, जहाँ उन्होंने रोलिंग प्रक्रिया देखी और संयंत्र के अधिकारियों से बातचीत किया। उन्हें मिल की आधुनिक सुविधाओं, उत्पाद श्रृंखला तथा घरेलू एवं रणनीतिक इस्पात आवश्यकताओं की पूर्ति में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में अवगत कराया गया।

दौरे का समापन एक संवादात्मक सत्र के साथ हुआ, जिसके दौरान समिति के सदस्यों ने आरएसपी के प्रदर्शन एवं प्रगति पर संतोष व्यक्त किया।

ट्रेलर की टक्कर से वृद्ध गंभीर

राउरकेला ०५/०१ (संवाददाता): सुंदरगढ़ जिले के हेमगिर थाना अंतर्गत कांधडुड़ा गांव में रविवार की शाम को ट्रेलर की टक्कर से वृद्ध गिर गए। गंभीर अवस्था में उन्हें पहले हेमगिर सरकार अस्पताल फिर वहां से बेहतर इलाज के लिए सुंदरगढ़ अस्पताल स्थानांतरित किया गया है। कांधडुड़ा गांव निवासी 60 वर्षीय नंदलाल भोई रविवार शाम को पैदल सड़क पर जा रहे थे तभी कोयला लेकर जा रहे ट्रेलर की टक्कर से उन्हें गंभीर चोट लगी। गांव वालों को इसका पता चलने के बाद वे वहां पहुंचे और उन्हें लेकर हेमगिर सरकारी अस्पताल गए जहां से नंदलाल को सुंदरगढ़ अस्पताल भेजा गया है। घटना के बाद चालक ट्रेलर लेकर फरार हो गया।